एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९

॥ओ३म्॥

डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २५ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १३ ● अंक : ६ ● २५ अप्रैल २०२४, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : ५०/- ● कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

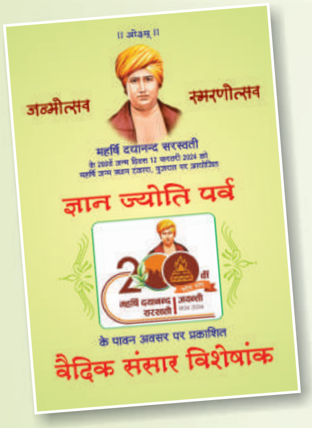

मान्यवर! सादर नमस्ते

आपने अभी तक वैदिक संसार विशेषांक प्राप्त किया या नहीं?

नहीं प्राप्त किया है तो शीघ्रता कीजिये,

क्योंकि यह मात्र एक पुस्तक नहीं होकर सनातन वैदिक धर्म संस्कृति के सिद्धान्तों/अवधारणाओं से युक्त तथा वेदों की महत्ता के पुनर्स्थापक देव दयानन्द जी के जीवन दर्शन के साथ प्रस्तुत एक विलक्षण धरोहर के रूप में यह अनुपम ग्रन्थ आपकी आने वाली अनेक भावी पीढ़ियों का दीर्घकाल तक पथ प्रदर्शन करेगा।

धार्मिक शिक्षा-दीक्षा विहीन वर्तमान युग में अनेक परिवार ऐसे हैं जिनके घरों में न वेद हैं न कोई वेदानुकूल ग्रन्थ। ऐसे में कैसे हमारा भविष्य उज्ज्वल होगा? यह रंगीन चित्र विशेषांक आपके जीवन व परिवार में स्वाध्याय, संस्कृति और संस्कारों की रिक्तता की भरपाई करेगा। तो आज अभी ९४२५०६९४९१ पर विशेषांक भेजने हेतु आदेश करें व अपने इष्ट मित्रों, स्नेहीजनों को विशेषांक मँगवाने हेतु प्रेरित करें। धन्यवाद

वैदिक संसार विशेषांक प्रकाशन के प्रमुख प्रेरणा स्रोत, वैदिक मन्तव्य चित्रों के निर्माण के प्रमुख सहयोगी, रूग्णावस्था में भी असीम आत्मबल के धनी, स्वाध्यायशील आर्य मोहनलालजी भाट लस्सानी दोयम (ब्यावर) को विशेषांक प्रति भेंट करते हुए वैदिक संसार के संरक्षक श्री रमेशचन्द्र जी भाट, अजमेर

राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष, आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह, वैदिक संसार के संरक्षक (प्रमुख सहयोगी) ठाकुर विक्रमसिंह जी को राष्ट्र निर्माण पार्टी के दिल्ली कार्यालय में विशेषांक प्रति भेंट करते हुए प्रकाशक सुखदेव शर्मा।

दर्शन योग धाम, लाकरोड़ा (गुजरात) के लोकार्पण आयोजन अवसर पर दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ के निदेशक, मूर्धन्य वैदिक विद्वान् स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक को विशेषांक की प्रति भेंट करते हुए प्रकाशक सुखदेव शर्मा।

वैदिक संसार के प्रमुख आशीर्वाद प्रदाता, १०५ वर्षीय न्यायमूर्ति तुलसीराम जी शर्मा को उनके जयपुर निवास पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए प्रकाशक सुखदेव शर्मा, साथ में बड़े भ्राता श्री रामकिशनजी शर्मा, जयपुर।

अद्भुत, विलक्षण, संग्रहणीय, ऐतिहासिक वैदिक संसार 'विशेषांक' की प्रतियाँ कुछ महानुभावों को प्रत्यक्ष भेंट की गईं

गुरुकुल मलारना चौड़ के आचार्य सोमदेवजी
को विशेषांक प्रति भेंट करते हुए
श्री ब्रह्मप्रकाश जी शर्मा, सवाई माधोपुर

आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या
को वैदिक रामकथा फरीदाबाद में विशेषांक प्रति
भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा

वयोवृद्ध दैनिक अग्निहोत्री श्री शंकरलालजी शर्मा, जयपुर को
विशेषांक प्रति भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा, साथ में हैं
श्री शंकरलालजी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री चन्द्रशेखर जी शर्मा एवं प्रपौत्र

आर्य समाज रावतभाटा में श्री पंकजकुमार जी एवं श्री सचिनकुमार जी को विशेषांक प्रति
भेंट करते हुए वैदिक संसार के सम्पादक ओमप्रकाश जी आर्य एवं उपस्थित आर्यजन

कर्मयोगी परिवार, सूरत के कर्मयोगी सदस्य दिलीप भाई खेर व उनके परिजनों को
उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा

जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा गुजरात के प्रदेशाध्यक्ष
श्री कैलाशचन्द्र जी जांगिड, सूरत को उनके शोरूम
बालाजी सिरामिक पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए
सुखदेव शर्मा। साथ में हैं दिलीप भाई खेर।

ब्याईजी श्री रामस्वरूप जी राजोतिया, जयपुर को
उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट
करते हुए सुखदेव शर्मा

श्री जयप्रकाश जी आर्य मैदानगढ़ी, दिल्ली
को उनके निवास पर विशेषांक प्रति
भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा

प्रख्यात आर्य नेता ठाकुरदास जी के सुपुत्र एवं आर्य
युवक परिषद, दिल्ली के अनिल जी आर्य के बड़े भाई
ओमप्रकाश जी सपरा एवं आपके सुपौत्र को उनके दिल्ली
निवास पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा

साहित्यकार मोहनलालजी दशोरा, नारायणगढ़ (म.प्र.) को
उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए सुखदेव शर्मा

कर्मयोगी परिवार के अभिन्न सहयोगी पुरुषोत्तम भाई आर्य, सूरत को
उनके निवास पर विशेषांक प्रति भेंट करते हुए प्रकाशक सुखदेव शर्मा

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणिमात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १३, अंक : ६

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अप्रैल, २०२४

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर
०९४२५०६९४९१

- सम्पादक
ओमप्रकाश आर्य
आर्य समाज रावतभाटा (राज.)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

- पत्र व्यवहार का पता
महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१

- अक्षर संयोजन–
नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	५१,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	११,०००/–
पंचवार्षिक सहयोग	२,१००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	१,३००/–
वार्षिक सहयोग	५००/–
एक प्रति	५०/–

(पंजीकृत डाक व्यय पृथक् से देय होगा।)

विज्ञापन : रंगीन पृष्ठ (भीतरी)	११,०००/–

खाता धारक का नाम : **वैदिक संसार**
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलियाहाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भूमण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
सम्पादकीय : वेद, महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यराष्ट्र संचिन्तन	ओमप्रकाश आर्य	०५
सदियों बाद भारत भू पर विश्ववन्द्य दयानन्द आया था	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	०६
महान् विभूतियाँ : राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक श्रीराम	प्रेमप्रकाश शास्त्री	०७
: ..., अमर बलिदानी : प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती	डोंगरलाल पुरुषार्थी	०९
मेरे विराट् ईश्वर	रमेशचन्द्र भाट	१०
ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना– मन्त्रों का नूतन पद्यानुवाद	रामनिवास गुणग्राहक	११
वेद मार्ग अपनाओ	देशराज आर्य	१२
भर्तृहरि शतक में धन की महिमा	शिवनारायण उपाध्याय	१३
ईश्वर को कभी मत भूलो/बनो सब देशभक्त बलवान्	पं. नन्दलाल निर्भय	१४
आत्मश्लाघा ही आत्महत्या	रामफलसिंह आर्य	१५
जाग मानव जाग रे	रमेशचन्द्र चौहान	१६
संस्कारों की प्रथम पाठशाला हमारा परिवार	आचार्य सोमेन्द्र श्री	१७
विद्या धन	पुष्पा शर्मा	१७
संस्कारों के अभाव में भारतीय संस्कृति का उपहास (गतांक से आगे)	डॉ. गंगाशरण आर्य	१८
परोपकार में ही जिया करो	आर्य पी.एस. यादव	२०
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज को वैदिक परम्पराओं का मार्ग दिखाया	पं. उम्मेदसिंह विशारद	२१
सच्चे ईश्वर में मन लगा लीजिये	राजेन्द्र बाबू गुप्त	२२
महिला वर्ग विशेष : समाज में नारी की भूमिका	स्वामी हरिश्वरानन्द सरस्वती	२३
यह झण्डा प्यारा ओ३म् का	खुशहालचन्द्र आर्य	२५
चिन्तन : कैसे रुके भ्रष्टाचार?	आर्य मोहनलाल दशोरा	२६
महर्षि दयानन्द जी का सामाजिक चिन्तन	डॉ. सत्यदेव सिंह	२७
श्रेष्ठ कर्म से जीवन सफल व मोक्ष मार्ग सफल होता...	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२९
व्यंग्य/कटाक्ष : आध्यात्मिक बिजनिस	सुन्दरलाल चौधरी	३०
स्वास्थ्य विशेष : गर्मी में रखें स्वास्थ्य का विशेष ध्यान	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	३१
कृष्ण–धर्म की विचारधारा	देवकुमार प्रसाद आर्य	३३
युवा वर्ग विशेष : अच्छे कार्य करें	आचार्य रामगोपाल सैनी	३३
आर्य जगत् की विविध गतिविधियाँ	संकलित	३४

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों की असहमति की स्थिति में कृपया पाठकगण सीधे लेखक से वार्ता करें। सम्पादक या प्रकाशक से नहीं।

अमृतमयी वेदवाणी

साम–अथर्व वेद शतक पुस्तक से

स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)

प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

त्वं यविष्ठ दाशुषो नृँः पाहि शृणुही गिरः।
रक्षा तोकमुत त्मना।।(४८)

–सामवेद उत्तरार्चिक.५.१.१८.३

शब्दार्थ : यविष्ठ = हे अत्यन्त बलयुक्त प्रभो! **दाशुषः** = दानशील **नृन् याहि** = मनुष्यों की रक्षा कीजिये **गिरः शृणुहि** = उनकी प्रार्थना रूपी वाणियों को सुनिये **उत तोकम्** = और उनके पुत्रादि सन्तान की **त्मना रक्षा** = अपने अनन्त सामर्थ्य से रक्षा कीजिये।

विनय : हे अत्यन्त बलयुक्त, अनन्त शक्तिमान्, जगन्नाथ परमात्मा! आप धार्मिक, दानी, दयालु, धर्मात्मा मनुष्यों की सर्वदा सर्वत्र रक्षा करिये तथा उनके पुत्र–पुत्रियों आदि सन्तानों की भी सर्वथा रक्षा कीजिये। हे प्रभु! ऐसे सज्जनों के पुकार को आप सुनिये तथा उन्हें सब प्रकार के धन–धान्य ऐश्वर्य से परिपूर्ण कीजिये जिससे वे वैदिक ज्ञान–विज्ञान के प्रचार–प्रसार में अपना विशिष्ट योगदान दे सकें तथा समाज में वैदिक धर्म की उन्नति, प्रगति के लिए समर्थ हो सकें।

हे भगवान्! जप के माध्यम से, भजन के माध्यम से या ध्यान चिन्तन गुणगान किसी भी प्रकार से हम आपको स्मरण करते रहें। वाचिक व मानसिक किसी भी उपाय से आपकी स्तुति करते हुए हम आपके ईश्वरीय गुणों को धारण करते हुए निष्काम भाव से दान, सेवा, परोपकार के कार्य कर सकें एवं स्वयं आपकी ओर बढ़ने तथा अन्यों को भी आपकी ओर बढ़ाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें। इसी प्रकार अपने सन्तानों को भी दान, सेवा, परोपकार, स्वाध्याय, सत्संग करने का संस्कार प्रदान करते हुए उन्हें वेद पथ पर आगे बढ़ाएँ।

पद्यार्थ

सर्वशक्तिमान्! प्रभु बलधारी,
रक्षा करो प्रजा व हमारी।
हों प्रसन्न सब जन प्रभु तुमसे,
धार्मिक दानी बनकर तुमसे।
परहित कर उपकार कमाएँ,
कृपा पात्र बन तब गुण गायें।
विमल भक्ति भर दो महतारी,
महके हर एक बगिया क्यारी।।

दर्शनाचार्या विमलेश बंसल
(विमल वैदेही), दिल्ली
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त मई २०२४ के कुछ महत्वपूर्ण पर्व-दिवस

१. महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य स्थापना दिवस, श्रमिक दिवस। ३. विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय तेन्दुआ दिवस। ४. महाराणा छत्रसाल जयन्ती, कोयला खनिक दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय अग्निशमन दिवस। ५. अन्तर्राष्ट्रीय पाई दिवस, विश्व हाथ स्वच्छता दिवस, विश्व हास्य दिवस (प्रथम रविवार), विश्व कार्टूनिस्ट दिवस। ७. रविन्द्रनाथ ठाकुर जयन्ती, विश्व अस्थमा दिवस (प्रथम मंगलवार), विश्व एथलेटिक्स दिवस, खगोल विज्ञान दिवस, बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन स्थापना दिवस। ८. विश्व रेडक्रॉस दिवस, विश्व थेलेसीमिया दिवस, द्वितीय विश्वयुद्ध के बलिदानियों का स्मरण व सम्मान दिवस (८ व ९ को)। ९. महाराणा प्रताप जन्म दिवस, गोपालकृष्ण गोखले, गुरु अंगददेव व प्राचीन मत से छत्रपति शिवाजी जयन्ती। १०. महर्षि भृगु जयन्ती। ११. विश्व प्रवासी पक्षी दिवस (मई व अक्टूबर का द्वितीय शनिवार), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस। १२. सन्त सूरदास जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय परिचारिका दिवस, मातृ दिवस (दूसरा रविवार), १३. रामानुजाचार्य जयन्ती। १४. डॉ. रघुवीर दिवस। १५. **स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती पुण्यतिथि,** राष्ट्रभक्त केवट जयन्ती, विश्व परिवार दिवस। १६. राष्ट्रीय डेंगू दिवस, सिक्किम राज्य स्थापना दिवस, विश्व रक्तचाप दिवस। १७. विश्व दूरसंचार एवं सूचना समाज दिवस, विश्व संग्रहालय दिवस राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस (तीसरा शुक्रवार), १८. विश्व एड्स वैक्सिन दिवस। २०. विश्व मधुमक्खी दिवस। २१. राजीव गाँधी पुण्यतिथि, आतंकवाद विरोध दिवस, संवाद एवं विकास हेतु सांस्कृतिक विविधता दिवस। २२. राजा राममोहन राय जयन्ती, गुरु अमरदास जयन्ती, अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस। २३. टेकचन्द महाराज जयन्ती, विश्व कछुआ दिवस। २४. अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रमण्डल दिवस। २५. आल्हा जयन्ती, विश्व थायराइड दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय लापता बाल दिवस। २७. जवाहरलाल नेहरू पुण्यतिथि। २८. वीर सावरकर जयन्ती, विश्व भूख दिवस, विश्व रक्त कैंसर दिवस, नसीराबाद छावनी क्रान्ति १८५७ दिवस, विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस। २९. **चौधरी चरणसिंह (परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान तथा भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री) पुण्यतिथि,** अन्तर्राष्ट्रीय एवरेस्ट दिवस। ३०. हिन्दी पत्रकारिता दिवस। ३१. देवी अहिल्याबाई होलकर जयन्ती, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द–प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, असत्य के खण्डन और सत्य के मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानवजाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

सम्पादकीय

वेद, महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य राष्ट्र संचिन्तन

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज, रावतभाटा, वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

वेद कहता है– **'अहं भूमिमददामार्याय'**। –ऋ. ४/२६/२ अर्थात् मैंने आर्यों को ही भूमि दी है। आगे वेद भगवान् कहते हैं– **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**।। –ऋ. ९/६३/५ अर्थात् सारे संसार को श्रेष्ठ बनाओ। निरुक्त में निर्वचन है– **'आर्य ईश्वरपुत्र:'** अर्थात् आर्य ईश्वर पुत्र है। **'उपदेश मंजरी'** नामक पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती का विचार– **'आर्य अर्थात् श्रेष्ठ। आर्यावर्त। इन नामों का अभिमान धरो। गुणभ्रष्ट हम लोग हुए तो हुए, परन्तु नामभ्रष्ट तो हमें न होना चाहिए।' 'हमारा नाम आर्य है।'**

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर आर्य राष्ट्र की संकल्पना आर्य राजा या आर्य नेता से ही की जा सकती है। अनार्यों से इस उच्च संचिन्तन से कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। वेद इस धरती का सार्वभौमिक और सार्वकालिक संविधान है। इसमें कुछ भी संशोधन किया ही नहीं जा सकता। कहा जाता है– 'यथा राजा तथा प्रजा। प्रजा राजा का अनुसरण करती है। राजा के लिए वेद में आया है– **'वरुणो मित्रो आर्यमा.'**। –अथर्व. १/१८/२ अर्थात् 'जल समान शान्त स्वभाव, श्रेष्ठों का मान करने वाला न्यायकारी, वायु के समान उपकारी पीड़ा को निकाल देवे।' **'वृत्रं यो जघान:'** (अथर्व. २/५/३ अर्थात् 'इन्द्र: = प्रतापी राजा ने वृत्रम् = डाकू को जघान = नाश किया था।' **''उतो कृत्याकृत: प्रजां.''** अथर्व. ४/१९/१ अर्थात् 'हिंसा करने वालों और उनके सेवकों को काट डाल जैसे वर्षा में नरकट घास को।' **''अथो हन्तासि रक्ष:...''** अथर्व. ४/१९/२ 'अर्थात् तू राक्षस का हनन करने वाला है।' **'तक्मानं नाशयन्नित:...'** अथर्व. ५/४/१ अर्थात् 'दु:खित जीवन को नाश करता हुआ तू आ।' अथर्व. ५/३१/१ से १२– राजा के धर्म का उपदेश केवल भावार्थ– 'राजा दुष्कर्मी विघ्नकारियों को सदा दण्ड देता रहे। उपकारी पक्षियों और चौपायों की रक्षा करे। औषधि आदि पदार्थ दूषित न होवें। गृहस्थ लोगों के कामों और पदार्थों में कोई उपद्रव न करे। सभाओं, उपवन, आदि और व्यवहारों में विघ्नकारी पुरुषों को दण्ड देता रहे। दुष्टों को राजा यथावत् दण्ड देकर नष्ट करे। दुराचारियों को यथावत् खोजकर दण्ड देता रहे।' **'इन्द्रस्य याहि प्रसवे मनोजना:...'** अथर्व. ६/१२/१ अर्थात् 'जगदीश्वर की आज्ञा में चल।' इस प्रकार इस धरती पर एक आर्य राजा ही वेद के आदेश का पालन कर सकता है। चूँकि आर्य को ईश्वर पुत्र कहा गया है, इसलिए वही आर्य राष्ट्र या आर्यावर्त की संकल्पना को समझकर उत्तम राष्ट्र स्थापित करने में समर्थ हो सकता है।

राजा को वेदज्ञ होना चाहिए। वेद को पढ़ने वाला वेद मार्ग का अनुगामी हो सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में लिखा है– **'राजा को सभापति तदधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।'** इस प्रकार महर्षि ने वेद के आधार पर राजा और प्रजा के गुणों का उल्लेख किया है। उसके जीवन में वेद का प्रकाश हो। आर्य राष्ट्र की कल्पना वैदिक शिक्षा से ही की जा सकती है। अन्यथा अवैदिक राज्य में तो पाखण्डों का ही साम्राज्य देखने को मिलेगा। उसी समुल्लास में महर्षि लिखते हैं– **'अत्यन्त योग्य प्रशंसनीय गुण, कर्म, स्वभावयुक्त, सत्करणीय, समीप जाने और शरण लेने योग्य सबका माननीय होवे उसी को सभापति राजा चुने।'** उन्होंने यह विचार अथर्ववेद के आधार पर लिखा है। राजा उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव वाला होना चाहिए। इसके लिए राष्ट्र में वैदिक शिक्षा आवश्यकीय है। वेद की ओर लौटकर ही वेदवाणी आज्ञा का पालन किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के प्रचार–प्रसार के लिए और वेदों की ओर लौटने–लौटाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। जो वेदानुगामी होगा वह पूर्णत: राष्ट्रभक्त होगा। उसका गुण, कर्म, स्वभाव उत्तम होगा। महर्षि जी यजुर्वेद का उदाहरण देते हुए उसी समुल्लास में लिखते हैं– **'पक्षपात रहित पूर्ण विद्या विनययुक्त सबके मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के सब भूगोल शत्रुरहित करो।'** यह **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का उद्घोष है क्योंकि परमपिता परमात्मा ने यह भूमि आर्यों अर्थात् श्रेष्ठों को दी है। श्रेष्ठ लोग इस धरती पर राज्य करें अन्यथा असुरों के द्वारा इसको दु:ख क्षेत्र बना दिया जाएगा। आसुरी प्रवृत्तियाँ संहारक होती हैं। ईश्वरपुत्र आर्य भूमण्डल को अपना परिवार समझता है। यही वसुधैव कुटुम्बकम् की उच्च भावना है। तात्पर्य यह है कि आर्य शासन में पूर्ण वैदिक विद्वान् को शासनाधिकारी होने का प्रावधान है। यह ईश्वर का उपदेश है। आदेश है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि–भाष्यभूमिका में राज प्रजाधर्म विषय के अन्तर्गत वेदमन्त्र का उल्लेख करते हुए लिखते हैं– **'हे मनुष्यों! तुम लोग धर्मात्मा होके न्याय से राज्य करो, क्योंकि जो धर्मात्मा पुरुष हैं मैं उसके क्षात्रधर्म और सब राज्य में प्रकाशित रहता हूँ।'** वे आगे लिखते हैं– **'इन्हीं वेदादि शास्त्रों की रीति से आर्यों ने भूगोल में करोड़ों वर्ष राज्य किया है। इसमें कुछ सन्देह नहीं।'** आर्य राष्ट्र का राजा धर्मात्मा होता है। जो धर्मात्मा होता है वह वेदमार्ग का अनुगामी होता है

क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद विरुद्ध आचरण को अधर्म और वेद के अनुकूल आचरण को धर्म मानते हैं। धर्मात्मा वही कहलाएगा जो वेद के अनुकूल आचरण करेगा। जो वेद के अनुकूल आचरण करेगा वह वेद को पढ़ने वाला अवश्य होगा। इस प्रकार आर्य राष्ट्र में वेद का आलोक होगा। वेदालोकित आर्य राष्ट्र भूमण्डल का सिरमौर होगा। महर्षिं दयानन्द ऐसे राष्ट्र का संचिन्तन करते हैं। इस धरती को वेद के प्रकाश में देखना चाहते हैं। ऐसा आर्यावर्त देश था कभी, जिसको महर्षि सुवर्णभूमि और पारसमणि की संज्ञा से नामित करते हैं।

यजुर्वेद ७/२ में **'सोमः पवते.'** राजा को सौम्यगुण सम्पन्न होने का निर्देश है। वहीं ९/१३ में **'योजना मिमानाः काष्ठा गच्छत'** बहुत कोशों से शत्रुओं को देख और वहीं जाके उनको वश में करे।' स्पष्टत: राजधर्म है कि वह प्रजा की हर प्रकार से रक्षा करे। ऐसा तभी सम्भव है जब वह स्वयं विद्वान् हो और वेद जानने वाला हो। वैदिक विद्वानों से वह उपदिष्ट हो तभी सम्पूर्ण राष्ट्र में वेद का प्रकाश होगा क्योंकि बिना वेद की आज्ञा का पालन किये इस धरती को सुख–शान्ति से युक्त किया ही नहीं जा सकता। परमात्मा ने श्रेष्ठ लोगों के लिए ही इस धरती का साम्राज्य प्रदान किया है। वेदों की ओर लौटने का यही आशय है। आज विश्व में अनेक समस्याएँ हैं। उनका समाधान वैदिक ज्ञान से ही सम्भव है अन्यथा स्वार्थी और उपद्रवकारी तत्व विघ्नोत्पादक ही रहेंगे।

अवैदिक अन्धकार में सन्मार्ग नहीं मिल सकता, क्योंकि वहाँ परमपिता का दिया ज्ञान है ही नहीं। ऐसे में मनुष्य अविद्या से ग्रस्त होगा ही। आर्य राजा, आर्य राष्ट्र, आर्य विचार, आर्य जनता, आर्य शिक्षा, आर्य भाव, आर्य चिन्तन, आर्य नेता का संचिन्तन यही इस धरती पर सुखों की वर्षा का एकमात्र उपाय है। राष्ट्र के कर्णधारों के लिए इस कल्याणी वाणी वेद के आदेश के प्रति चिन्तन आवश्यकीय है। राजा का अनुसरण प्रजा करती है। राजा के कार्यों का प्रभाव प्रजा पर पड़ता है। यदि वही अविद्या से ग्रस्त होगा तो प्रजा को सही दिशा में कैसे ले जा सकता है? वैदिक विचारों का प्रकाश आर्यों से ही होगा, अन्य से आशा नहीं की जा सकती। आर्यों! चिन्तन करो। समूचा समाज ही अवैदिक कृत्यों में फँसा हुआ है। पाखण्डों में वैदिक सत्य नहीं मिलेगा। यह आज के युग की पुकार है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजा और राजसभा के सभासद के लिए चारों वेदों की कर्मोपासना, ज्ञान, विद्याओं का जानने वाला तथा दण्ड नीति, न्याय विद्या, आत्मविद्या का वेत्ता होना बताया है। यह उदाहरण उन्होंने मनुस्मृति से उद्घृत किये हैं। समूचा राष्ट्र कहाँ पर खड़ा है? कहाँ जा रहा है? कौन ले जा रहा है? कैसे ले जा रहा है? आर्यजन इसका चिन्तन करें। यह आर्य समाज के लिए समसामयिक चिन्तन–बिन्दु है। ■

सदियों बाद भारत भू पर विश्ववन्द्य दयानन्द आया था

सदियों बाद भारत भू पर विश्ववन्द्य दयानन्द आया था,
करोड़ों में एक वह महामानव, महर्षि कहाया था।।
दो सौ वर्ष पूर्व वह जग को निहाल करने आया था,
दयालु दयानन्द मानवता व सत्य की ढाल बन छाया था।।
वह युग पुरुष भारत भूमि गुजरात में जाया था,
छोटा सा गाँव टंकारा विश्व नक्शे पर उभर आया था।।
सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने सोए भारत को जगाया था,
देश की दासता के विरुद्ध नव जागरण शंख बजाया था।।
महर्षि जगत् में सत्य ज्ञान स्थापित करने आया था,
वह सर्वत्र अज्ञान, अन्याय व अभाव हटाने आया था।
दयानन्द कृण्वन्तो विश्वमार्यम् सन्देश सुनाने आया था,
वह विश्व के प्रत्येक मानव को 'पवित्र' बनाने आया था।
विश्व गुरु दयानन्द विश्व को एक परिवार बनाने आया था,
'विश्वं भवत्येकनिड़म्' वैदिक सन्देश सुनाने आया था।।
वह ऋषि **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** सद्भाव जगाने आया था,
इससे वह महामानव विश्व हितैषी सर्वत्र कहाया था।।
ऋषि विश्व से अन्धविश्वास व पाखण्ड हटाने आया था,
वह जग को आडम्बर रहित सत्य मार्ग दिखाने आया था।।
दयानन्द वैद्य वैज्ञानिक वैदिक सद्ज्ञान सुनाने आया था,
वह विश्व में सत्य धर्म ध्वजा फहराने आया था।।
दयालु दयानन्द प्राणिमात्र पर दया दिखाने आया था,
वह गौ अनाथ विधवाओं का कष्ट मिटाने आया था।।
महर्षि ने ब्रह्माण्ड निर्माता एक ही ब्रह्म बताया था,
उसने एक ही ब्रह्म की उपासना का मन्त्र सुनाया था।।
वह परिव्राजक अवधूत, नैष्ठिक परमहंस त्यागी दण्डी संन्यासी था,
उसने सर्वत्र घूम–घूम भारत में एक अलख जगाया था।।
आर्य कवि ऋषि पद रज कण बन ऋण चुका रहा,
दयालु ने हमें धर्म भ्रष्ट विधर्मी बनने से बचाया था।।

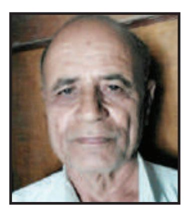

अम्बालाल विश्वकर्मार्य
पिपलिया मण्डी, जिला : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९५३२४१३

राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक श्रीराम

प्रेमप्रकाश शास्त्री

स्नातक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९४७९१०१७६५

मर्यादा पुरुषोत्तम छोटे-बड़े, राजा-रंक, निर्धन-धनी, स्वामी-सेवक, नर-नारी, गुरु-शिष्य, शत्रु-मित्र आदि सबके हैं।

जहाँ एक ओर राष्ट्र शब्द की उत्पत्ति राज दीप्तौ धातु और ष्ट्रन् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होती है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के तद्धित शब्द और ईय प्रत्यय के जुड़ने से राष्ट्रीय शब्द बनता है। राष्ट्र केवल एक भूखण्ड का ही नाम नहीं अपितु उसमें रहने वाले असंख्य नर-नारी तथा उनसे सम्बन्धित शिक्षा, संस्कृति, संस्कार, सभ्यता, परम्परा, इतिहास, मर्यादा और सरोकार से है। श्रीराम महर्षि वशिष्ठ के गुरुकुल में वेद-वेदांगों को पढ़कर राष्ट्ररक्षा की दीक्षा से दीक्षित हुए और राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि माना। भगवती श्रुति कहती है कि भूमि मेरी माँ है और मैं उसका पुत्र हूँ। हे भूमि माता! हम तुम्हारे लिए बलिदान हो जाएँ। हे माता! जब मैं असमर्थ हो जाऊँ तब तू मुझे अपनी गोद में धारण कर लेना।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
–अथर्ववेद १२/१/१२

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।।
–अथर्ववेद १२/१/६२

भूमे मातर्निधेहि मा।।–
अथर्ववेद १२/१/६३

श्रीराम की इसी राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर पूर्व प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी जी के उद्गार हैं **''भारत भूमि का टुकड़ा नहीं है, यह जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है। यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है। यह वन्दन की धरती है, अभिनन्दन धरती है। इसकी हर एक नदी हमारे लिए गंगा है। इसका कंकर-कंकर हमारे लिए शंकर है। हम जीएँगे तो इसी भारत के लिए और मरेंगे तो इसी भारत के लिए। मरने के बाद भी गंगाजल में बहती हमारी उन अस्थियों में कोई कान लगाकर सुनेगा तो एक ही आवाज आएगी 'भारत माता भी जय'।''** भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन इसी राष्ट्रीय भावना के प्रचार-प्रसार में न्योछावर कर दिया इसलिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। उनके जीवन का अवलोकन करने से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि वे राष्ट्रीय अस्मिता को सर्वोपरि मानते थे। इसी विशेष गुण के कारण उन्हें राष्ट्रीय चेतना का पुरोधा कहा जाता है। आदि महाकाव्य रामायण को रचने से पूर्व ब्रह्मर्षि वाल्मीकि ने महर्षि नारद से पूछा था– हे मुनिवर! इस समय संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है जो गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, उपकार को मानने वाला, सत्यवक्ता, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, समस्त प्राणियों का हित चाहने वाला विद्वान्, सामर्थ्यवान् सभी को प्रिय लगने वाले, मन पर निग्रह करने वाले, क्रोध को जीतने वाले, आभामण्डित, किसी की निंदा न करने वाले आदि दिव्य गुण-सम्पन्न हो। महर्षि वाल्मीकि को उत्तर देते हुए ब्रह्मर्षि नारद ने कहा था– हे मुनिवर! आपके इन दुर्लभ गुणों से युक्त इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न विख्यात महान् पुरुष भगवान् राम है जो मन को वश में करने वाले, महाबलवान्, कान्तिमान्, धैर्यवान्, धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, यशस्वी, ज्ञानी, पवित्र, श्रीसम्पन्न, धर्मरक्षक, स्वजनपालक, वेद-वेदांगों के तत्त्ववेत्ता, धनुर्वेद-प्रवीण तथा नाना शास्त्र विशारद, समदर्शी आदि विरुदावली से विभूषित हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम छोटे-बड़े, राजा-रंक, निर्धन-धनी, स्वामी-सेवक, नर-नारी, गुरु-शिष्य, शत्रु-मित्र आदि सबके हैं। उनके लिए

कोई पराया नहीं है। महर्षि वाल्मीकि ने इसी उदात्त भावना का जिक्र करते हुए निषादराज गुह से श्रीराम की मित्रता का वर्णन कर उनके राष्ट्रीय एकता का जो परिचय दिया है वह अनुपम है।

तत्र राजा गुहो नाम रामस्यात्मसमः सखा।
निषादराजो बलवान् स्थपतिश्चेति विश्रुतः।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग ५०, श्लोक ३३

शृंगवेरपुर में निषादराज गुह राज्य करता था। वह श्री रामचन्द्रजी का प्राणों के समान प्रिय मित्र था। उसका जन्म निषादराजकुल में हुआ था। वह शारीरिक शक्ति और सैनिक दृष्टि से भी बलवान् तथा वहाँ के निषादों का सुविख्यात राजा था। श्रीराम के आने की खबर सुनकर वह अत्यन्त व्याकुल होकर दल-बल सहित उनके श्री चरणों में उपस्थित होता है।

स श्रुत्वा पुरुषव्याघ्रं रामं विषयमागतम्।
वृद्धैः परिवृतोऽमात्यैर्ज्ञातिभिश्चाप्युपागतः।।
ततो निषादाधिपतिं दृष्ट्वा दूरादुपस्थितम्।
सह सौमित्रिणा रामः समागच्छद् गुहेन सः।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग ५०, श्लोक ३४-३५

निषादराज को दूर से आया हुआ देख श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मण के साथ आगे बढ़कर उससे मिले और अपनी उदारता दिखलाई। वनों में, कन्दराओं में, रहने वाले समस्त वनवासियों एवं प्राणियों के साथ मित्रता व आत्मीयता उनकी समदर्शिता का अपूर्व द्योतक है।

मर्यादा पुरुषोत्तम ने महात्मा भरत को कुशल समाचार पूछने के बहाने राजनीति का जो उपदेश दिया है वह उनकी दूरदर्शिता, राष्ट्रीय अस्मिता और चेतना का प्रतीक है। राजसूय एवं अश्वमेध आदि यज्ञों को सम्पन्न करने वाले, धर्मपरायण, सत्यनिष्ठ राजा दशरथ कुशल तो हैं? अपने पिताजी के माध्यम से अपनी कुल परम्परा की चर्चा करते हुए राजसूय एवं अश्वमेध आदि यज्ञों का उल्लेख इस बात का संकेत है कि उनके पिताजी का चक्रवर्ती साम्राज्य निष्कण्टक था।

कच्चिद् दशरथो नाम कुशली सत्संगरः।
राजसूयाश्वमेधानामाहर्ता धर्मनिश्चितः।।

-अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक ८

''मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव'' का जो आदर्श प्राचीन ऋषि-मुनियों ने स्थापित किया था वह श्रीराम के जीवन में पल-पल दिखाई देता है।

स कच्चिद् ब्राह्मणों विद्वान् धर्मनित्यो महाद्युतिः।
इक्ष्वाकूणामुपाध्यायो यथावत् तात! पूज्यते।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक ९

माता कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, नित्यप्रति अग्निहोत्र करने वाले विद्वान्, देवजन, पितर, नौकर–चाकर, पिता के समान वानप्रस्थी, वृद्धजन तथा वैद्यो का समाचार पूछने के बाद राजनीति में किसी भी राजा के लिए विजय का मूलमन्त्र देते हुए कहते हैं-

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव!।
सुसंवृत्तो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक १६

हे रघुकुल में उत्पन्न भरत! जिस राजा के राज्य में शास्त्र को जानने वाले श्रेष्ठ मन्त्रियों के द्वारा मन्त्र (विचार) को गोपनीय रखा जाता है उस राजा की जीत सुनिश्चित मानी जाती है।

कच्चिन्निद्रावशं नैषि कच्चित् काले अवबुध्यसे।
कच्चिच्चापररात्रेषु चिंतयस्यर्थनैपुण्यम्।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक १७

हे भरत! राजा को अत्यधिक निद्रा के वश में नहीं होना चाहिए और समय से अवश्य जागना चाहिए। रात्रि के चौथे पहर में उठकर राजलक्ष्मी के बारे में चिन्तन करना चाहिए।

कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह।
कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।।

–अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक १८

हे भरत! राष्ट्र सम्बन्धी विचार की मन्त्रणा अकेले तो नहीं करते हो? या फिर बहुतों के साथ तो नहीं करते? कहीं तुम्हारे द्वारा विचार किया हुआ गोपनीय तथ्य दूसरे राज्य तक तो नहीं पहुँचता?

इस प्रकार राजनीति की विशद् चर्चा करते हुए, वेद की आज्ञा का उपदेश देते हुए भरत के माध्यम से जो राजधर्म का मर्म बतलाते हैं वह हम सबके जीवन में आज भी प्रासंगिक हैं।

कच्चित्ते सफलाः वेदाः कच्चित्ते सफलाः क्रियाः।
कच्चित्ते सफलाः दाराः कच्चित्ते सफलं श्रुतम्।।

-अयोध्या काण्ड सर्ग १००, श्लोक ७२

हे भरत! तुम्हारा जीवन वेदानुकूल तो है? तुम जो कार्य कर रहे हो वह सफल तो है? तुम्हारे राज-परिवार की नारियाँ कुशल से तो हैं? तुम जो शास्त्र पढ़े हो उसका जीवन में सफल विनियोग तो कर रहे हो?

इतना ही नहीं समुद्र तट पर वानरों की सेना लंका पर आक्रमण करने के लिए तत्पर है। ऐसी विषम परिस्थिति में नीति कुशल प्रभु राम ही हैं जिन्होंने शत्रु के भाई को गले लगाकर राष्ट्रीय अखण्डता का परिचय दिया।

न वयं तत्कुलीनाश्च राज्यकांक्षी च राक्षसः।
पण्डिता हि भविष्यन्ति तस्माद् ग्राह्यो विभीषणः।।

-युद्ध काण्ड सर्ग १८, श्लोक १३

हम लोग इसके कुटुम्बी तो हैं नहीं और यह राक्षस राज्य पाने का अभिलाषी है। इन राक्षसों में बहुत से लोग बड़े विद्वान् भी होते हैं इसलिए विभीषण को अपने पक्ष में मिला लेना चाहिए।

ततस्तु सुग्रीववचो निशम्य तद्
हरीश्वरेणाभिहितम् नरेश्वरः।
विभीषणेनाशु जगाम संगमं
पतत्रिराजेन यथा पुरंदरः।।

-युद्ध काण्ड सर्ग १८, श्लोक ३९

तदनन्तर वानरराज सुग्रीव की कही हुई वह बात सुनकर राजा श्रीराम शीघ्र आगे बढ़कर विभीषण से मिले, मानो देवराज इन्द्र पक्षीराज गरुड़ से मिल रहे हों।

इस प्रकार निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि श्रीराम का जीवन 'ऋग्वेद के संगठन सूक्त'

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।।

-ऋग्वेद १०/१९१/१

हम सभी को सामर्थ्य प्रदान करें कि उनकी राष्ट्रीय अस्मिता को समझ सकें और अपने राष्ट्र के मन्त्रों की जीवन्त व्याख्या है जो सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सर्वग्राह्य है। ईश्वर क्रियान्वित कर सकें। ■

बम परीक्षक, अमर बलिदानी : प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती

डोंगरलाल पुरुषार्थी

प्रधान आर्य समाज, कसरावद,
जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

बलि-पंथी को प्राणों का मोह न होता।
कर्तव्य-मार्ग में मिलन-बिछोह न होता।।
अपने प्राणों से राष्ट्र बड़ा होता है।
हम मिटते हैं, तब राष्ट्र बड़ा होता है।।
(सरल जी)
यह जीवन जो अपना और औरों का होता है।
यह अपना नहीं, वरन् राष्ट्र का होता है।।
जो महत्त्व फूलों से नहीं,
सारी बगियाँ से होता है।
कब कौन खिले, कब झड़े,
मोल एक फूल का होता है।।

यह संसार विचित्रताओं से भरा है। मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव की समानताएँ औरों में भी अक्सर पायी जाती है। इसी कारण भारत वर्ष को अनेकताओं में एकता का राष्ट्र कहा जाता है और एक नाम के अनेक व्यक्ति तो पाए जाते हैं, किन्तु कर्मों के क्षेत्र में समानताएँ भी प्राय: देखी जाती हैं। पश्चिम बंगाल के १४ वर्षीय क्रान्तिकारी सुशीलकुमार सेन जो बम के निर्माण में विशेष दक्ष थे तो बम-विस्फोट में खुदीराम और प्रफुल्ल कु. चाकी का अचूक निशाना भी। परिणामत: अन्धेरे के कारण मि. किंग्स फोर्ड की बग्घी को निशाना बनाने के स्थान पर उसी रंग-रूप, आकार की दूसरी बग्घी (कुमारी कैनेडी) की चकनाचूर हो गई और किंग्स फोर्ड बाल-बाल बच गया। खुदीराम बोस गिरफ्तार होकर उन्हें फाँसी की सजा हुई तथा प्रफुल्ल कु. चाकी एक सिपाही के चंगुल से बचने के प्रयास में गोली चलाई और पकड़े जाने पर चाकी ने अपने ऊपर ही फायर करके बलिदान हो गए। क्रान्तिकारी भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को जेल से पलायन करवाने के उद्देश्य से बम-निर्माता, परीक्षक और बम-विस्फोटक भगवतीभाई बोहरा (दुर्गा भाभी के पति) एक बम के परीक्षण के दौरान बम ने ही भगवती भाई को लील लिया, ठीक ऐसे ही प्रफुल्ल कु. चाकी के हमनाम प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती भी बम-परीक्षण में बलिदान हो गए।

एक क्रान्तिकारी उल्लासकर दत्त जो फ्रांस से बम बनाने की कला सीखकर आए थे (जिनका जीवन चरित्र वैदिक संसार के विगत मार्च अंक में प्रकाशित किया गया था) सन् १९०८ में क्रान्तिकारी बारीन्द्र कुमार घोष, विभूति सरकार, उल्लासकर दत्त और प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती आदि ने मिलकर उल्लासकर दत्त की युक्ति के अनुसार एक शक्तिशाली बम का निर्माण किया। अब बम के परीक्षण की आवश्यकता थी, सभी क्रान्तिकारियों ने एक स्थान सुना, जो बंगाल के देवधर जिले का रोहिणी निर्जन पर्वत था। पर्वतीय क्षेत्र का जंगल निर्जन और मीलों तक कोई बस्ती या छोटे-मोटे गाँव नहीं थे। इन क्रान्तिकारियों में बम के विस्फोट का उत्तरदायित्व प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती ने सम्भाला। चक्रवर्ती रंगपुर विप्लव केन्द्र का मुख्य सदस्य था। प्रफुल्लचन्द्र को एक बहुत बड़ी शिला के पीछे छिपकर बम फेंकना था, जो कई पहाड़ियों के बीच एक पहाड़ी का चयन बम विस्फोट के लिए किया गया था। चक्रवर्ती को बम फेंकने के साथ ही जल्दी से एक शिला के पीछे छिप जाना था। दूसरे क्रान्तिकारी अपनी सुरक्षा के लिए आसपास की पहाड़ियों पर जाकर छिप गए। अब चक्रवर्ती ने बम की पीन को खींचा और बम को नीचे की तरफ फेंक दिया। बम हवा में था और उसके आसपास हल्का धुआँ फैल चुका था। बम भयंकर आवाज के साथ फूटा। विस्फोट को सुनकर सभी क्रान्तिकारी खुशी के मारे उछल पड़े क्योंकि बम का परीक्षण सफल सिद्ध हो चुका था लेकिन दुर्भाग्य यह कि चक्रवर्ती शिला के नीचे अपना मुँह छिपा न सका। अस्तु एक पत्थर का बड़ा टुकड़ा उसकी खोपड़ी पर जा लगा, जिसके कारण पत्थर की चोट से एक आँख और सिर का आधा हिस्सा उड़ चुका था। रक्त के फव्वारों से सारा शरीर रक्तरंजित होकर प्राण-पखेरू उड़ गए। उल्लासकर दत्त भी एक पत्थर से घायल हो गए, किन्तु हालत गम्भीर नहीं थी। सभी क्रान्तिकारी बम के विस्फोट से खुश होकर चक्रवर्ती को बधाई देने उसके पास पहुँचे, तो क्या देखते हैं कि चक्रवर्ती मृत पड़े थे जो कि बहुत अनर्थ हो चुका था। साँझ का अन्धेरा छा चुका था, सभी के सामने यही समस्या थी कि चक्रवर्ती के शव का क्या किया जाए? दाह-संस्कार के लिए पर्याप्त ईंधन का अभाव था, अगर शव को दफन किया जाए तो कुदाल-फावड़ा नहीं थे। पथरीली भूमि को अन्य तरीके से खोदना भी सम्भव नहीं था। अन्तत: सभी ने मिलकर निश्चय किया कि शव को खुला ही छोड़ दिया जाए। इस प्रकार उल्लासकर दत्त को कन्धे पर उठाकर घर की ओर चल दिए।

अगले दिन वे जब वहाँ पहुँचे तो पाया कि लाश ठीक उसी प्रकार पड़ी है जैसी उन्होंने छोड़ी थी। उसके अगले दिन जब वे लोग वहाँ पहुँचे तो लाश वहाँ पर नहीं थी। सभी क्रान्तिकारी हैरान थे कि लाश कहाँ गई? उन सभी के लिए आश्चर्य का विषय बना हुआ था। एक का कथन था- कल सुबह ही तो हम लोग अपने साथी की लाश इसी स्थान पर रखी देखकर गए थे। आज जब हम लोग चौबीस घण्टे बाद यहाँ आए तो लाश नहीं है। लाश स्वयं तो चल कर कहीं जा नहीं सकती। आश्चर्य है कि यहाँ से कहाँ गई? इस कथन पर दूसरे साथी ने कहा- ''हम लोग इस पहाड़ी पर निरन्तर आ रहे हैं और घण्टों तक हम यहाँ ठहरते हैं। इस घनघोर जंगल में

आदमी तो क्या हमें कोई परिन्दा भी नहीं दिखाई दिया। ऐसी स्थिति में हम लोग कल्पना भी कैसे करें कि कोई उस लाश को उठा ले गया होगा।'' एक अन्य क्रान्तिकारी ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा- ''यह कल्पना तो की जा सकती है कि जंगली जानवरों या चील-कौओं आदि ने लाश को नोंच लिया होगा। पर यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि लाश को कोई जानवर घसीट कर ले गया होगा? इस हालत में कुछ अवशेष या निशान तो यहाँ अवश्य मिलने चाहिए थे।'' एक अन्य की टिप्पणी इस प्रकार है- ''एक अनाम शव के पाए जाने की चर्चा न तो शहर में है और न किसी समाचार-पत्रों में ही है। उस लाश का क्या हुआ? इस रहस्य का खुलासा किसी भी प्रकार हो नहीं रहा है।'' सभी लोग अपने-अपने ढंग से अटकलें लगाते रहे, पर कोई भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाया।

इसी प्रकार दिनांक २८.०५.१९३० को भगवतीभाई बोहरा एवं उनके साथी सुखदेवराज, वैशंपायन आदि क्रान्तिकारी रावी नदी के जंगल में एक बहुत बड़े खड्डे में भगवती भाई द्वारा बम परीक्षण के दौरान भगवतीभाई बलिदान हो गए। उनके दाह-संस्कार से धुआँ होने के कारण, इस धरती पुत्र को धरती में गाड़ना पड़ा, किन्तु प्रफुल्लचंद्र चक्रवर्ती गाड़ने से भी वंचित रह गए। जिस प्रकार प्रफुल्ल कु. चाकी अपनी ही गोली से बलिदान हुए, ठीक ऐसे ही हमनाम प्रफुल्लचन्द्र चक्रवर्ती भी अपने बम द्वारा राष्ट्र को अपना बलिदान दे गए।

जीना-मरना, दोनों ही जिनको आते,
सच सर्वाधिक, वे ही महान् होते हैं।
वे जीते, तो लोगों को जीवन देते हैं,
मरकर भी प्रेरक प्राणवान् होते हैं।।
होता बलिदान यदि एक व्यक्ति, वह एक नहीं,
अपने जैसे वह कई खड़े कर जाता है।
उसका रक्त, जन-रक्त में उफान लाता है।
ठण्डे रक्त में वह बिजली भर जाता है।।

जय भारती।।

■

मेरे विराट् ईश्वर

पञ्च महाभूत, उनकी पाँच तन्मात्राएँ और उन तन्मात्राओं का मानव शरीर में स्थान को सृष्टि उत्पत्ति के अनुसार विवरण।

रमेशचन्द्र भाट 'आर्य पथिक'
पसन्द नगर, कोटड़ा, अजमेर (राज.)
चलभाष : ९४१३३५६७२८

मेरे विराट् ईश्वर, तू मुझमें है समाया।
सब तुझमें है समाया, तेरा न पार पाया।।

आकाश जैसा विस्तृत, घर सृष्टि का बनाया।
आकार से रहित तू, साकार को बनाया।
सब ध्वनियों के रचयिता, श्रवणों में तू समाया।
मेरे विराट् ईश्वर, तेरा न पार पाया।।१।।
सब तुझमें है समाया, तू मुझमें है समाया। मेरे विराट्...

आकाश में है वायु, तूने ही है बहाया।
सब जीवधारियों में, बन प्राण तू समाया।
स्पर्श से रहित तू, त्वचा में तू समाया।
मेरे विराट् ईश्वर, तेरा न पार पाया।।२।।
सब तुझमें है समाया, तू मुझमें है समाया। मेरे विराट्...

वायु कणों का घर्षण, अग्नि का रूप पाया।
सब प्राणियों में सुन्दर, सब रूप तुझसे आया।
जग में प्रकाश तुझसे, चक्षु में तू समाया।
मेरे विराट् ईश्वर, तेरा न पार पाया।।३।।
सब तुझमें है समाया, तू मुझमें है समाया। मेरे विराट्...

अग्नि को करके शीतल, जल तूने है बहाया।
सब जीव औषधि में, रस बनके है समाया।
स्नेहसिक्त सब हैं तुझसे, जिह्वा में तू समाया।
मेरे विराट् ईश्वर, तेरा न पार पाया।।४।।
सब तुझमें है समाया, तू मुझमें है समाया। मेरे विराट्...

जल से निकाल पृथ्वी, उस पर हमें बसाया।
सब प्राणियों को रचकर, कर्मों का फल दिलाया।
सर्वत्र गन्ध तुझसे, घ्राणों में तू समाया।
मेरे विराट् ईश्वर, तेरा न पार पाया।।५।।
सब तुझमें है समाया, तू मुझमें है समाया। मेरे विराट्...

मेरे विराट् ईश्वर, रमेश में समाया।
सब तुझमें है समाया, तेरा न पार पाया।

ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना : मन्त्रों का नूतन पद्यानुवाद

रामनिवास 'गुण ग्राहक'

भरतपुर (राज.)
चलभाष : ८७६४२४४१४२

ओ३म् विश्वानिदेव... यद्भद्रं तन्न आसुव।।

भावार्थ : हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:खों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ है, वह सब हमको प्राप्त कीजिए।१।।

हे सब जग के उत्पादक और सब ऐश्वर्यों के स्वामी।
शुद्ध स्वरूप सकल सुखदाता कृपा करो अन्तर्यामी।।
सारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों से हमको दूर करो।
कल्याणक, गुण, कर्म, स्वभावों, द्रव्यों से भरपूर करो।।

ओ३म् हिरण्यगर्भ:.... कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

भावार्थ : जो स्व प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य, चन्द्रमा आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्य आदि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति-प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।२।।

स्वयं प्रकाश स्वरूप आपने सूर्य चन्द्रमा रच डाले।
सब जग के नामी स्वामी, ये दो प्रकाश देने वाले।।
जग बनने से भी पहले थे, हे भू-रवि धारण कर्त्ता।
एक सुचेतन रूप योग-भक्ति से भक्त ध्यान धरता।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा... कस्मै देवाय हविषा विधेम!!

भावार्थ : जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने हारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं। जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दु:खों का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्त:करण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें।३।।

आत्मज्ञान के और शरीरादि बल के भी हो दाता।
तेरी शिक्षा मान भक्ति करना सब देवों को भाता।।
शरण आपकी मोक्ष सुखद है, अशरण मृत्यु दु:ख वाली।
आज्ञा पालन रूपी भक्ति करें सदा, न रहें खाली।।

ओ३म् य: प्राणतो निमिषतो...
कस्मै देवाय हविषा विधेम!!

भावार्थ : जो प्राण वाले और अप्राणीरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा हैं, जो इस मनुष्य आदि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को आज्ञा-पालन करने में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।४।।

प्राणी और अप्राणी सबके राजा महिमाशाली।
मनुज और गौ आदि का तन, रचना तेरी निराली।।
हे ऐश्वर्यों के दाता हम तेरी भक्ति करते।
सब उत्तम सामग्री को तेरी आज्ञा में धरते।।

ओ३म् येन द्यौरूग्रा... कस्मै देवाय हविषा विधेम!!

भावार्थ : जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दु:ख रहित मोक्ष को धारण किया है। जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं। वैसे ही सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है। हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।५।।

जिस ईश्वर ने उग्र सूर्य-पृथ्वी को धारण किया।
जग का सुख और मोक्षानन्द उसी ने हमको दिया।।
सब लोकों का निर्माता और भ्रमण कराता वो ही।
जो है सुखद-काम्य हम सब भजते उस ईश्वर को ही।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेता... वयं स्याम पतयो रयीणाम्!!

भावार्थ : हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् आपसे भिन्न दूसरा कोई इन, उन, सब उत्पन्न हुए जड़-चेतन आदि को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग आपका आश्रय लें और वाञ्छा करें, उस-उसकी कामना हमारी सिद्ध होवे। जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।६।।

हे जग के सच्चे स्वामी, सबसे निर्लिप्त आप हैं।
जड़-चेतन से सर्वोपरि का, करते सदा जाप हैं।।
जिस-जिस की हम करें कामना, वो सब पूरी कीजे।
धन-ऐश्वर्यों के स्वामी भगवन् हमको कर दीजे।।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता... धामन्नध्यैरयन्त!!

भावार्थ : हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के

समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक वह सब कामों का पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोक मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है। जिस सांसारिक सुख-दु:ख से रहित नित्य आनन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं। वहीं परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति किया करें।७।।

वह जगदीश्वर सबको भ्राता-सम सुख देने वाले।
जग-जनिता, सबका ज्ञाता, मोक्षादि वही सम्भाले।।
जग-सुख–दु:ख से रहित, मोक्ष में सब विद्वान् विचरते।
गुरु, आचार्य, न्यायदाता, राजा की भक्ति करते।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा... भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम!!

भावार्थ : हे स्वप्रकाश-ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे सकल सुखदाता परमेश्वर। आप जैसे सम्पूर्ण विद्यायुक्त है। कृपा करके हम लोगों को विज्ञान व राज्य आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्मों को दूर कर दीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।८।।

ज्ञान-प्रकाश स्वरूप! जगत् को आप प्रकाशित करते।
ज्ञान व राज्य प्राप्त करने हित ध्यान आपका धरते।।
अच्छे धर्मयुक्त, आप्तों के पथ से हमें चलाओ।
कपट-कुटिलता, पाप-वृत्तियाँ, भगवन् दूर भगाओ।।
इसीलिए हम हे जगदीश्वर! भक्ति करें आपकी।
सदा रहें सब आनन्दित, छुट्टी हो पाप-ताप की।। ■

२० भूले–भटके सदस्यों की घर वापसी

गाँव मोहनीखेड़ा जिला झाबुआ के बाबूभाई एवं मुकेश डोडिया ७–८ वर्ष पूर्व ईसाई पादरी के लालच और बहकावे में आकर ईसाई बन गए थे। लेकिन इन्होंने कहा हम ऊपरी मन से ईसाई थे। वरसिंह आर्य एवं राजेन्द्र गुप्ता ने इनसे सम्पर्क किया और समझाईश देने पर इन्होंने कहा कि हम पुन: इस वेद पथ की ओर आना चाहते हैं। राजेन्द्र जी ने मुझसे कहा कि बंशीलाल जी आपको इनके शुद्धिकरण का कार्य करना है और दि. १५/३/२४ के दिन मैं २ किलो हवन सामग्री और यज्ञोपवीत लेकर १ बजे मोहनीखेड़ा पहुँचा। वरसिंह आर्य ने सभी तैयारी कर रखी थी। चार व्यक्तियों के जोड़े यज्ञ में बैठाए। तीन बार गायत्री मन्त्र बुलवाया। फिर आचमन, अंग स्पर्श, प्रतिज्ञा मन्त्र, यज्ञोपवीत मन्त्र के साथ यज्ञ कराया। फिर शुद्धिकरण मन्त्रों से आहूति दी। मन्त्रों का जाप कराया। समझाईश दी। जल छिड़का। २० महिला एवं पुरुष अपने घर वापस आए। करीब ७० महिला और पुरुष उपस्थित थे। कुछ धार से भी सदस्य आए थे। सभी सदस्यों की उपस्थिति में शुद्धिकरण का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

बन्शीलाल आर्य
बरखेड़ापंथ (मन्दसौर), प्रधान : म.भा. आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्भाग रतलाम (म.प्र.)

वेद मार्ग अपनाओ

जो सुख चाहो नर–नारी तुम वेद मार्ग अपनाओ।
छल–कपट, पाखण्ड झूठ और दम्भ का भूत भगाओ।।

सब जन भाई–भाई हैं एक ईश्वर की सन्तान,
निराकार सर्वव्यापक ने समझा सबको एक समान।
आपस का मतभेद मिटा, सब मिलकर एक हो जाओ।।१।।
जो सुख चाहो...

परमार्थ ही जीवन में हो उद्देश्य तुम्हारा,
स्वार्थ भाव मिटे सबका जीवन हो उजियारा।।
इस नश्वर मानव चोले में, नेकी के कर्म कमाओ।।२।।
जो सुख चाहो...

नर तन जीवन मिलता है शुभ कर्म करने से,
मोक्ष प्राप्त होता है वेद मार्ग पर चलने से।
पढ़कर मनन करो वेद पर, और जीवन सफल बनाओ।।३।।
जो सुख चाहो...

वेद पवित्र पुस्तक है, ईश्वर का है इसमें ज्ञान,
सब विद्या है लिखित वेद में पढ़ लो प्रिय देकर ध्यान।
पाकर दिव्य ज्योति प्रकाश, इस जग में अमर हो जाओ।।४।।
जो सुख चाहो...

जीवन में हो लक्ष्य तुम्हारा, आत्मज्ञान पाना,
आर्यो का कर्तव्य है, वेद का पढ़ना और पढ़ाना।
कर्तव्य पथ पर सदा चलो और जग में नाम कमाओ।।५।।
जो सुख चाहो...

नि:स्वार्थ कर्तव्य करना ही, रहे उद्देश्य तुम्हारा,
ऋषि ऋण से उऋण होने का दृढ़ रहे लक्ष्य हमारा।
स्वाध्याय करो ऋषि ग्रन्थों का श्रेष्ठ आर्य कहलाओ।।५।।
जो सुख चाहो नर–नारी तुम वेद मार्ग अपनाओ।

(यह भजन १९७३ में लिखा गया था।)

देशराज आर्य
पूर्व प्राचार्य, रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१६३३७६०९

भर्तृहरि शतक में धन की महिमा

शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

भर्तृहरि धन के महत्व को बहुत अच्छी तरह समझते थे इसलिए उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ भर्तृहरि शतक के वैराग्य शतक में धन के विषय में अच्छा वर्णन किया है।

धन की महिमा बताते हुए वे लिखते हैं-

जातिर्यातु रसातलं गुणगणैस्तत्राप्यधो गच्छतु शीलं
शैलतटात्पतस्त्वभिजनः संदह्यतां वह्निना।
शौर्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं येनैकेन विना
गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे।।

जाति चाहे पतित होकर रसातल में चली जाए, गुणों का समूह चाहे उससे भी अधिक नीचे चला जाए। शील गुण (सदाचार) चाहे पहाड़ के तट से गिर कर चूर-चूर हो जाए, कुलीनता चाहे आग से जल जाए, शौर्य शूर वीरता चाहे शत्रु के वज्र से नष्ट हो जाए किन्तु केवल हमारे पास धन रह जाए जिसके अभाव में ये सब गुण तुच्छ तृणवत् हो जाते हैं।

भर्तृहरि का कहना है कि धन सब गुणों का आश्रम है।

तानीन्द्रिद्वियूयाण्यविकलानि तदेव कर्म सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव त्वन्य क्षणेन् विचित्रमेतत्।।

वही अकुण्ठित बुद्धि है, वही वाणी है, वही काम है, वही नाम है, वही आदमी है, परन्तु धन की गरमी नहीं है। वही मनुष्य क्षण मात्र में कैसे बदल जाता है। बड़े आश्चर्य की बात है कि धन के नष्ट हो जाने पर मनुष्य क्या से क्या हो जाता है। अतः धन की महिमा अपार है। धन का अभाव हो जाने पर सब कुछ शून्य हो जाता है।

धन के अभाव में सब कुछ व्यर्थ है इस धारणा को विकसित करते हुए भर्तृहरि कहते हैं-

यस्यास्तिवित्तं स नरः कुलीनः सः पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वेगुणाः कांचनमाश्रयन्ते।।

इस संसार में जिसके पास धन है वही व्यक्ति कुलीन है, श्रेष्ठ परिवार वाला है, वही व्यक्ति विद्वान् है, वही व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता है और उसी व्यक्ति में सभी गुण पाए जाते हैं। वह व्यक्ति ही एक श्रेष्ठ उपदेशक है और वही व्यक्ति दर्शनीय है क्योंकि सभी गुण स्वर्ण में निवास करते हैं। वास्तव में धन के होने पर व्यक्ति समाज में वह स्थिति प्राप्त कर लेता है जिसके लिए वह अयोग्य है।

धन व्यक्ति को कितना बदल देता है, इस पर भर्तृहरि कहते हैं-

परिक्षीणः कश्चित् स्पृहयति यवानां प्रसृतये स
पश्चात्सम्पूर्णः गणयति धरित्री तृणसमाम्
अतश्चानैकान्त्याद् गुरुलघुतयाऽर्थेषु धनिना मदस्या
वस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति च।।

जो व्यक्ति अपनी निर्धन अवस्था में मुट्ठी भर जौ के लिए लोगों के सामने हाथ पसारता है, वही व्यक्ति धनवान् हो जाने पर तृण के समान तुच्छ समझने लगता है।

इसलिए स्थिरता न होने के कारण धनवानों की अवस्था धन की लघुता और गुरुता के कारण वस्तुओं को छोटा या बड़ा बनाती है। अतः मनुष्य का छोटा अथवा बड़ा होना परिस्थिति के वश में होता है। अतः मनुष्य को जीवन में स्थिरता लानी चाहिए।

धन की तीन अवस्थाएँ होती हैं-

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।

धन की तीन दशाएँ होती हैं- दान देना, भोग करना और नाश होना। जो व्यक्ति अपने धन का उपयोग दान देने में नहीं करता है, धन का भोग भी नहीं करता है उसका धन वैसे ही नष्ट हो जाता है।

सम्पत्सु महत्ता चित्तं भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्स च महाशैल शिलासङ्घात कर्कशम्।।

सम्पत्ति प्राप्त होने पर बड़ों का मन कमल के समान कोमल हो जाता है और वहीं निर्धनता आने पर पहाड़ों की विशाल चट्टानों के समान कठोर हो जाता है। सज्जनों के आचरण में यही विलक्षणता है। सो सब सहन करते हैं वे महान् होते हैं।

भर्तृहरि का कथन है कि धन का सदुपयोग होवे।

दौर्मन्त्रयान्नृपतिर्विनिश्यति यतिः सङ्गत् सुतो लालनात्
विप्रोडन ध्ययनात् कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात्।
हीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः स्नेहः प्रवासाश्रयान्मैत्री
चाप्रणयात् समृद्धिरनयात्त्याग प्रमादाद्धनम्।।

विभिन्न व्यक्ति किन कारणों से नष्ट हो जाते हैं इस पर भर्तृहरि लिखते हैं- बुरी मन्त्रणा के आधार पर कार्य करने से राजा, विषयों में आसक्त हो जाने पर योगी, अधिक लाड़-प्यार करने से पुत्र, स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण, दुष्टों के सहवास से चरित्र, मदिरा पीने से लज्जा, समय पर देख-भाल न करने से खेती, अधिक समय से प्रदेश में रहने से स्नेह, प्रेम के न रहने से मित्रता, अन्याय करने से ऐश्वर्य, असत्पात्र में व्यय करने और प्रमाद करने से धन विनष्ट हो जाता है। अतः मनुष्य को सम्भल कर चलना चाहिए। धन दान और परोपकार में व्यय करना सदैव अनुकरणीय होता है।

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्नतु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणा पराणां परोपकारैर्नतु तु चन्दनेन।।

कानों की शोभा शास्त्रों के श्रवण से होती है, सोने के कुण्डल पहनने से नहीं होती है। हाथ की शोभा दान देने से, हाथों में कंगन पहिनने से नहीं। करुणा परायण दानशील लोगों का परोपकार से, मस्तक शोभित होता है, चन्दन आदि के लेप करने से, लगाने से नहीं अर्थात् सज्जनों का शास्त्र ज्ञान दान और परोपकार सदा अनुकरणीय होता है। इतिशम्। ■

बनो सब देशभक्त बलवान्

भारत के नेताओ! जागो, करो देश का ध्यान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान् देश है खतरे में।।
किसी समय यह भारत प्यारा, जग का था सरदार सुनो।
गुरु मानता या जग सारा, करता था सत्कार सुनो।।
वेद कथा घर-घर होती थी, थे वैदिक विद्वान् देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।१।।
अश्वपति, हरिश्चंद्र, राम से, त्यागी थे सम्राट् यहाँ।
कृष्ण, युधिष्ठिर भोजराज के, न्यारे ही थे ठाट यहाँ।।
चरित्रवान् सम्राट यहाँ थे, ईश्वर भक्त महान्, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।२।।
वैदिक पथ तजने के कारण, पनपी पापिन फूट यहाँ।
दुष्ट विधर्मी लोगों ने की, फिर मनमानी लूट यहाँ।।
शैतानी कर रहे अभी भी, रात-दिवस शैतान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।३।।
यवन और ईसाई मिलकर, रचते हैं षड्यंत्र सुनो।
अमरीका, इंग्लैंड, अरब से, मिलते जिनको मन्त्र सुनो।।
मतान्तरण नित करा रहे हैं, तुम्हें नहीं है ज्ञान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।४।।
उग्रवाद-आतंकवाद का, भारत में है, जोर सुनो।
नंगे होकर नाच रहे हैं, गुण्डे-डाकू, चोर सुनो।।
हमें मिटाने का प्रयास करता है पाकिस्तान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।५।।
महावीर बलवान्, बहादुर, बनो तपस्वी, त्यागी तुम।
भरतलाल अरु लखनलाल से, बन जाओ वैरागी तुम।।
स्वामी दयानन्द योगी से, बनो गुणों की खान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।६।।
वेद, शास्त्र, रामायण, गीता, का जग में प्रचार करो।
ऋषि-मुनियों, विद्वानों का, श्रद्धा से सत्कार करो।।
देशद्रोही, गद्दारों को, मारो पापी जान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।७।।
वीर बहादुर बलवानों के, साथ जगत् चलता है।
डरपोक निर्बलों का जग में, नहीं बहाना चलता है।।
योगीराज कृष्ण का था यह, अर्जुन को मार्गदर्शन, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।८।।
अगर देश मिट गया तुम्हारा, तुम भी सब मिट जाओगे।
देशद्रोही कायर पापी महानीच कहलाओगे।।
दुनिया मूढ़ बताएगी, तुम सोचो कुछ नादान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।९।।
जीवित भी है, मरे हुए वे, जिन्हें देश से प्यार नहीं।
ऐसे लोगों को, भारत में रहने का अधिकार नहीं।।
'नन्दलाल' निर्भय के अब तुम, सुना करो व्याख्यान, देश है खतरे में।
स्वार्थ को दो त्याग, बनो सब देशभक्त बलवान्, देश है खतरे में।।१०।।

ईश्वर को कभी मत भूलो

जगदीश्वर का है बड़ा निराला खेल।
उसके आगे धनी-बली सब, हो जाते हैं फेल।।
ईश्वर है निर्लेप, निरंजन, जन्म कभी ना लेता है।
माता-पिता, गुरु है सच्चा नेताओं का नेता है।।
देवों का है देव, दयानिधि, सबसे बड़ा विजेता है।
कर्मों के अनुसार सभी को, जगदीश्वर फल देता है।।
अत्याचारी स्वार्थियों से, कभी न करता मेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।१।।
बिन हाथों के जगत् पिता वह, काम निराले करता है।
न्यायकारी, जगदीश निराला, नहीं किसी से डरता है।।
वैदिक धर्मी गुणवानों के, कष्ट दयामय हरता है।
बिन कानों के सुनता है वह, बिन पग ईश विचरता है।।
दुष्टों की नाकों में वह, देता है डाल नकेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।२।।
सूरज, चाँद, पृथ्वी, तारे, प्रभु ने विरले बनाए हैं।
ऊँचे पर्वत, गहरे सागर, देख सभी चकराए हैं।।
तरह-तरह के पशु-पक्षी हैं, सबके मन को भाए हैं।
कीट, पतंग बनाए अनगिन गिनती में ना आए हैं।।
तरह-तरह के वृक्ष बनाए, तरह-तरह की बेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।३।।
अखिल विश्व उस कारीगर की, बड़ी निराली माया है।
शुभ कर्मों के कारण प्रभु ने, मानव हमें बनाया है।।
पावन वैदिक ज्ञान दिया है, भला-बुरा दर्शाया है।।
वे मानव हैं बड़े अभागे, प्रभु उपकार भुलाया है।
धूर्त, नास्तिक, दुष्कर्मों से, सब जाते हैं जेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।४।।
अगर भला चाहो तुम अपना, प्रभु को कभी न भूलो तुम।
धन-दौलत, ऊँचे पद पाकर, हे मित्रो! मत फूलो तुम।।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, बनो तपस्वी-त्यागी तुम।
राम, कृष्ण, ऋषि दयानन्द से, बनो सभी वैरागी तुम।।
फेल एक दिन हो जाएगी, जीवन रूपी रेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।५।।
अब भी अगर नहीं जागोगे, भारी कष्ट उठाओगे।
समय निकल जाएगा, पगलो! फिर पीछे पछताओगे।।
अबला, दीन, अनाथों की अब, करो रात-दिन सेवा तुम।
'नन्दलाल' सेवा करके, पाओगे अद्भुत मेवा तुम।।
समझो, क्यों तुम, मूर्खता से कष्ट रहे हो झेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।६।।

पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

आत्मश्लाघा ही आत्महत्या

✍ **रामफल सिंह आर्य**
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

महाभारत का महायुद्ध चल रहा था जिसमें दोनों ओर के महारथी अपने–अपने शौर्य का प्रदर्शन कर रहे थे। प्रतिदिन न जाने कितने योद्धा काल के कराल गाल में समा जाते थे। कहीं रक्त पिपासु बनी असिधारा अपने शत्रुओं के शोणित से अपनी चिर प्रतिक्षित पिपासा को शान्त कर रही थी तो कहीं गदाओं की गहन गम्भीर गर्जन अस्थियों का भंजन कर रही थी। भयंकर फल वाले भल्ल दृढ़ कवचों का भेदन कर के वीरों का मान मर्दन कर रहे थे। पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, दुर्योधन, कर्ण, अश्वत्थामा, आचार्य कृप आदि पाण्डवों की सेना का संहार कर रहे थे तो धृष्टद्युम्न, भीम, अर्जुन आदि महायोद्धा कौरवों की सेना को सरकण्डों की भाँति उखाड़कर फेंक रहे थे। अत्यन्त तीक्ष्ण शरों की सनसनाहट से वायुमण्डल प्रकम्पित हो रहा था तो दिव्य अस्त्रों से निकलती प्रकाश की किरणें कितने सिरों की बलि ले जाती थी, कोई गणना ही न थी। इधर से आजानुबाहु महावीर अर्जुन और उधर से महारथी कर्ण जिस ओर भी अपना रथ ले जाते उसी ओर धरा शवों से पटने लगती और किस सैनिक की ग्रीवा किसके धड़ पर जा पड़ी, किसके हाथ और किसके पैर कहाँ पर पड़े हैं, कोई पहचान भी न सकता था। दोनों ओर के योद्धाओं का उबलता शोणित जब भूमि पर गिरता था तो मानों धरा को भी दग्ध कर जाता था। धर्मराज युधिष्ठिर जब युद्ध करते हुए वीर कर्ण के समक्ष आये तो आन की आन में कर्ण ने उनके शस्त्रों को ऐसे निष्फल कर दिया जैसे कोई मस्त गजराज मार्ग में आने वाले वृक्षों एवं लताओं को उखाड़ फेंकता है। अपने तीक्ष्ण एवं अचूक बाणों द्वारा तो युधिष्ठिर को क्षत–विक्षत किया ही, परन्तु अपनी वाणी द्वारा भी उनका घोर तिरस्कार करते हुए कहा– **'कुन्तीनन्दन जाओ। अपने घर चले जाओ अथवा जहाँ श्रीकृष्ण एवं अर्जुन हों वहीं पधारो। तुम युद्ध के योग्य नहीं हो।'** किसी योद्धा का भला इससे बढ़कर और क्या अपमान हो सकता था? युधिष्ठिर के तन में चुभे तीर तो निकाल दिये गये परन्तु उनके सबसे अधिक दुर्जेय और दु:खदायी शत्रु द्वारा दिये गये वाणी के कटु घावों को भला कौन और कैसे भर सकता था। अपमान, तिरस्कार एवं घृणा की अग्नि उन्हें निरन्तर दग्ध कर रही थी।

वीर अर्जुन उनकी इस व्यथा को जानकर बोल उठे कि आज के युद्ध में कर्ण जीवित नहीं बचेगा। परन्तु कर्ण का वध करना कोई बच्चों का खेल न था। दोनों वीरों का भयानक तुमुल युद्ध हुआ। वार पर वार हुए। दोनों घायल हुए। दोनों के दाँव–पेंच चले परन्तु अर्जुन अपना वचन पूरा न कर सके। युद्ध के उपरान्त जब वे अपने शिविर में आए तो युधिष्ठिर जो यह आशा संजोए बैठे थे कि उनका दुर्मुख शत्रु आज मारा जाएगा, आते ही अर्जुन से बोल उठे– **'कहो मार दिया कर्ण को? मेरे लिए शुभ समाचार लाए हो ना।'** परन्तु यह जानकर कि कर्ण आज भी जीवित बच गया, युधिष्ठिर अमर्ष एवं रोष के वशीभूत होकर बोल उठे–

धिग्गाण्डिवं धिक् च ते
बाहुवीर्यमसंख्येयान् बाणगंणाश्चधिक ते।
धिक् ते केतुं केसरिणः सुतस्यं कुशानुदत्तं
च रथं च धिक् ते।।

(महा. कर्ण. १५/१४)

अर्जुन! तुम्हारे इस गाण्डीव धनुष को धिक्कार है। तुम्हारी भुजाओं के पराक्रम को धिक्कार है। धिक्कार है तुम्हारे इन असंख्य बाणों को। धिक्कार है तुम्हारी वानर ध्वजा को और धिक्कार है अग्निदेव के इस दिये हुए रथ को। बस फिर क्या था? अर्जुन की प्रतिज्ञा थी कि यदि कोई उनके गाण्डीव का अपमान करेगा तो वे उसे जीवित न छोड़ेंगे। म्यान से निकलकर तलवार उनके हाथ में आ गई और वे बड़े भ्राता को मारने के लिए सन्नद्ध हो गए। श्रीकृष्णजी की नीति ही यहाँ पर काम आई और उन्होंने अर्जुन को समझाया। अब अर्जुन को आत्मग्लानि हुई कि वह क्या करने चला था। तो ग्लानि के कारण स्वयं मरने को तैयार हुआ। पुन: योगिराज ने उसे समझाते हुए कहा कि यदि स्वयं को मारना ही है तो अपनी प्रशंसा अपने मुख से कर दो। क्योंकि वह व्यक्ति तो मरा हुआ ही समझा जाता है जो आत्मश्लाघा करता हो। अपनी ही वाणी से अपना गुणगान करता हो। उन्होंने कहा–

हत्वाऽऽत्मानमात्मना प्राप्नुयास्त्वं
भ्रातुर्वधान्नरकं चातिधोरम्।
ब्रूहि च वाचाहा गुणानिहात्मनस्तया
हतात्मा भवितासि पार्थ।।

(महा. कर्ण. ६९/२२)

अर्थात् भाई का वध करने से जिस अत्यन्त घोर नरक की प्राप्ति होती है, उससे भी भयानक नरक तुम्हें आत्महत्या करने से प्राप्त हो सकता है अत: पार्थ! अब तुम अपनी ही वाणी के द्वारा अपने गुणों का वर्णन करो। ऐसा करने से यह मान लिया जाएगा कि तुमने अपने ही हाथों अपना वध कर लिया।

पाठकगण! उपर्युक्त वर्णन का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर जो मुख्य बात उभरकर आती है वह है कि कभी भी अपने मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। बड़ाई तो तब है जब कोई दूसरा हमारी बड़ाई करे। दूसरों में भी जो हमारे विरोधी हैं वे हमारे गुणों का गान करें तब लोगों को यह बताने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी कि हम स्वयं कैसे हैं। छोटा मुँह और बड़ी बात के तो कहने ही क्या, जो बड़ा है, वास्तव में योग्य है, उसे भी

अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए। सूर्य अपना परिचय अपने प्रकाश से दे देता है और चंद्रमा अपनी शीतलता से। इसी प्रकार से हमारे कर्म ही स्वयं और वास्तविक परिचय देने वाले होते हैं। हमारी वाणी की अपेक्षा हमारे कर्मों की सुगन्ध उठे तो अधिक कल्याणकारी होगी। वैसे भी हमें दूसरों से अपनी प्रशंसा सुनने की अपेक्षा अपने दोष, अपनी कमियाँ सुनने की आदत डालनी चाहिये।

परन्तु संसार में है इसके विपरीत। हम अपने दोष तो कभी सुनना ही नहीं चाहते, वरन् अपनी बड़ाई (चाहे झूठी ही क्यों न हो) सुनना चाहते हैं। नीति कहती है कि किसी व्यक्ति की यदि निन्दा करनी है तो उसके मुँह पर करो और यदि प्रशंसा करनी है तो पीठ पीछे करो। और जो व्यक्ति मुँह पर मीठा बोले और पीठ पीछे कार्य बिगाड़े उसे तो उस घड़े के समान जानना चाहिए कि जिसके मुख पर दूध लगा हो और अन्दर विष भरा हो। यह तो दूसरे प्रशंसकों की बात है परन्तु जहाँ पर व्यक्ति स्वयं ही अपनी प्रशंसा का पुल बाँधने लग जाए तो महाभारतकार के शब्दों में, अपितु श्रीकृष्णजी महाराज के शब्दों में उसने साक्षात् मृत्यु को अपना लिया है। मात्र मृत्यु को ही नहीं अपितु घोर नरक को अपना लिया है। उसे पतन के गर्त में जाने से कोई बचा नहीं सकता। नरक किसी स्थान विशेष का नाम नहीं अपितु **'नरकं न्यर्कं नीचैर्गमनं रमणं स्थानपल्पमत्यस्तीति वा'** अर्थात् नरक उसको कहते हैं जिसमें मनुष्य निरन्तर नीचे ही नीचे गिरता जाता है। इतना नीचे कि फिर उसके जीवन में सुख, शान्ति व आनन्द का थोड़ा सा भी अवसर नहीं रह जाता। यह है आत्मस्तुति का फल।

एक बार हम दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव पर गए हुए थे। उस समय वहाँ स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आए हुए थे। यज्ञोपरान्त स्वामीजी का अत्यन्त सुन्दर व अनुकरणीय व्याख्यान हुआ। उनके शब्द तो बहुत सरल थे परन्तु उनमें भाव बहुत ऊँचा था। उत्सव की समाप्ति पर जब सब लोग जाने लगे तो हम उनसे मिलने गए। अन्य कई लोग और भी बैठे थे। अभिवादन के उपरान्त हमने उनसे कहा कि स्वामीजी, हम जा रहे हैं, आपका आशीर्वाद लेने आए हैं। जाते-जाते हमें कुछ उपदेश भी दीजिये। स्वामीजी हँस पड़े। उनकी वृद्ध एवं अनुभवी आँखें मानो आज भी हमारे सामने हैं। चेहरे पर वह निश्छल हँसी मानो आज भी हमारे आगे है। बोले- **उपदेश! उपदेश तो भाई मात्र इतना ही है कि देखो पहली बात तो यह है कि कभी भी अपनी प्रशंसा स्वयं मत किया करो। दूसरी बात- पुस्तकों के पन्ने पलटते समय उंगलियों को थूक मत लगाया करो और तीसरी बात यह कि- महर्षि दयानन्द के प्रति सदा श्रद्धाभाव रखा करो। नित्यप्रति उनके ग्रन्थों को पढ़ा करो।** इसके उपरान्त हम उन्हें प्रणाम करके बाहर आ गए। देखा आपने, शब्द तो अति सरल और संक्षिप्त हैं परन्तु कितनी मार्मिक बातें कह गए। आप्त पुरुषों की यही बात है। सबसे पहली बात यही कही कि कभी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करनी चाहिए। आत्मस्तुति से भले ही थोड़ी देर के लिए हमें सन्तुष्टि मिल जाती है परन्तु अन्ततः यह घातक ही सिद्ध होती है। यदि सामने वाला व्यक्ति विद्वान् है तो वह तुरन्त जान लेता है कि हम कैसे हैं? उसके सामने तो आत्मस्तुति का प्रश्न ही नहीं उठता और मूर्ख के सामने अपनी बड़ाई करके लेना क्या है? अतः आत्मश्लाघा किसी भी रूप में कहीं भी उचित नहीं है। आत्मश्लाघा करने वाला व्यक्ति जीवन में कभी उन्नति प्राप्त नहीं करता, दोषों का घर बन जाता है। धीरे-धीरे सब लोग उसका खोखलापन जान लेते हैं।

श्रेष्ठ योद्धा, श्रेष्ठ नेता, श्रेष्ठ अधिकारी कभी भी सफलता का श्रेय स्वयं नहीं लेता अपितु अपने सैनिकों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों के सिर पर रख देता है। इससे उसकी लोकप्रियता तो बढ़ती ही है, साथ ही उसके सहयोगी उसके लिए और भी अधिक पुरुषार्थ करके उसकी उन्नति में सहायक बन जाते हैं। इसके विपरीत मूर्ख एवं घमण्डी व्यक्ति अच्छे सहयोगियों को भी अपना शत्रु बना लेता है। इसलिए आत्मश्लाघा से सदैव दूर रहना चाहिए और यह विचार सदैव करते रहना चाहिए कि मुझे अपने दोष दूर करने हैं। उन्नति का यही सोपान है। आत्मश्लाघा तो साक्षात् आत्महत्या के समान ही होने से अत्यन्त त्याज्य है। ■

जाग मानव जाग रे

जाग मानव जाग रे,
जाग रे जन जाग रे
क्यों डूबा विषय नदी नद में।
सोए रहना ही कलियुग है
द्वापर जग जा आज रे
उठ जा उठजा त्रेता आया
चलना सतयुग साज रे-२
दूजे प्रहर बिताया द्वापर
तीजे त्रेता जाय रे
सोये सोये सतयुग तेरा
चौथा बीता जाय रे-२
विष पी विष को सुला दिया और
जग में अमृत जगा दिया
जाग सको तो ऐसा जागो ज्यो
दयानन्द ऋषिराज रे-२
ऋषि के राजदुलारों जागो
प्रभु की सन्तानों जागो
अमृत पुत्रों प्यारे जागो
विश्वनीड बन जाये रे-२
ऋक् की अमर ऋचाओं जागो
यजु के जागो यज्ञ रे,
अथर्वांगिरस जागो, जागो
सोम सुधा स्वर भेद रे-२
वेद पठन से मिट जाएगा
जन्म-मरण भव खेद रे।
क्यों डूबा विषय नदी नद में।

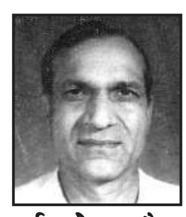

आर्य रमेश चौहान

आर्य समाज, २६२-ए, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष : ९८२६०३१३४९

संस्कारों की प्रथम पाठशाला हमारा परिवार

आचार्य सोमेन्द्र सिंह

रिसर्च स्कॉलर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
ए-१९, न्यू जनकपुरी, अजंता कॉलोनी,
गढ़ रोड, मेरठ, पो. मेडिकल, जि. (उ.प्र.)
चलभाष : ९४१०८१६७२४

संस्कारों को व्यवहार में लाना मानवता का पर्याय है। जिसे हम जिस स्तर पर जितनी मात्रा में स्वयं एवं बच्चों में विकसित कर सकें तो उतने ही अनुपात में हम देवत्व की ओर बढ़ सकेंगे। जब हम इस दिशा में विकसित होंगे तभी हमारे राष्ट्र और समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव है। यदि हम अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण करेंगे तो उनका सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक विकास पूर्ण रूप से होगा और अपने राष्ट्र को विश्व में सबसे आगे ले जाने में सक्षम होंगे, जो मानदण्ड आज से हजारों वर्ष पहले चलन में थे, वे अब असामान्य बातें हो गई हैं, क्योंकि हम अपने दैनिक व्यवहार एवं आचरण में वैदिक संस्कारों को त्याग कर घातक पश्चिमी सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं। जिसके कारण हम अपने संस्कारों और संस्कृति से दूर होते चले जा रहे हैं। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा अगर हम अब भी जाग जाएँ और वैदिक संस्कृति को अपनाएँ तो हमारा एवं हमारे राष्ट्र का भविष्य पुन: सुनहरा हो जाएगा। हम किस तरह के मनुष्यों के साथ रहते हैं, इस पर भी विचार करना अति आवश्यक है। क्योंकि कभी-कभी न चाहते हुए भी हमारे कदम गलत रास्तों की तरफ चल पड़ते हैं। अगर हमारा धैर्य और संयम सुदृढ़ है, तो सफलता हमारे निकट होगी। हम अपनी संचित ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में लगाएँगे। जिनसे हम स्वयं के कल्याण के साथ समाज और देश का कल्याण कर सकें। नकारात्मक विचार हमारी प्रगति कमजोर करते रहते हैं। इनसे बचना ही हितकर होगा। धैर्य और संयम की जरूरत हमें अधिकतर नकारात्मक विचारों के परिणामस्वरूप पड़ती है जिनसे बचा जा सकता है। जब हम वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करेंगे तो हमेशा अच्छा सोचेंगे तथा व्यवहार में भी अच्छा करेंगे। जब हम अपने जीवन में सही गलत का भेद समझने का सामर्थ्य अर्जित कर लेंगे तो हमें अपने वास्तविक जीवन का बोध होगा। जीवन को सही दिशा एवं गति मिलेगी। संस्कारों की प्रथम पाठशाला हमारा परिवार होता है। संस्कार विहीन जीवन का कोई अर्थ नहीं होता। मानव जीवन के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला संस्कारों पर ही रखी है। वैदिक परम्परा में मानव को संस्कारित करने का कार्य माता के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाता है। माता ही मानव की पहली गुरु और गर्भ ही प्रथम पाठशाला है। दूसरा गुरु पिता होता है और आचार्य वह अन्तिम गुरु होता है जो बच्चे की रुचि के अनुसार उपयोगी शिक्षा देकर संस्कार वाले उत्तम नागरिक बनाकर समाज के लिए एक उपयोगी और लाभप्रद घटक प्रस्तुत करता है। जबसे समाज में उत्तम आचार्यों का स्थान नहीं रहा तब से आधुनिक समाज में विकृतियाँ आ गई है। उत्तम आचार्यों के अभाव में आज बालकों को उत्तम संस्कार नहीं मिल रहे जिस कारण आज का युवा गलत मार्ग पर जा रहा है। यदि आज युवाओं को सन्मार्ग पर चलाना है, तो सही संस्कार देने की आवश्यकता है। शुद्ध संस्कार ही जीवन को सार्थक बना सकते हैं। ■

विद्या धन

ईश्वर ने मानव को देखो
वाणी मस्तिष्क प्रदान किया।
विद्या जैसे धन को देकर
फिर उसका कल्याण किया।
विद्या के तुल्य न कोई
ज्ञान वह इतना रखता है।
बड़े-बड़े वह काम है करता
फिर उसका फल चखता है।
यदि वह करता परोपकार तो
कारण एक ही होता है।
वेदों में अमृत है विद्या
नहीं समय को खोता है।
अमृत को तो मोक्ष हैं कहते
जिसको मानव पाता है।
रह अविद्या से दूर वह
द्वार स्वर्ग के जाता है।
विद्या तो है ऐसा जादू
जन्म-मरण से मुक्त करे।
क्या कहने उसकी महिमा के
गुणों को स्वयं में युक्त करे।
न तो इसको चोर चुराए
न ही राजा छीन सके।
न कोई इसको भ्राता बाँटे
न कोई इसको बीन सके।
जितना व्यय करो उतनी बढ़ती
बिना करे घट जाती है।
बड़ी पुरानी बात है यह तो
सरस्वती कहलाती है।
सबसे बड़ा जो गुण है देखो
यह विद्वान् बनाती है।
राजा पुजता अपने देश में
सर्वत्र यह पूजी जाती है।
शांत हृदय बन जाता मानव
ईश्वर का प्यारा होता।
सभी उदार हैं इस दुनिया में
ज्ञानी कुछ अलग होता।
यदि कोई मानव पाप भी करता
वह भी पार हो जाता है।
ज्ञान की नौका ऐसी होती
वह पावन बन जाता है।
इसीलिए तो हे मानव! अब
विद्या धन को पाना है।
ईश्वर का पाकर सानिध्य
द्वार मोक्ष के जाना है।

पुष्पा शर्मा

मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) चलभाष : ९०४५४४३१४१

संस्कारों के अभाव में भारतीय संस्कृति का उपहास

डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

(गतांक से आगे)

देखिए बच्चा तब आपकी बात मानेगा जब आप उसके अच्छे–बुरे का ध्यान रखकर निर्णय लेंगे, न कि बिना सोचे–विचारे बस ये मानकर कि कहीं बच्चा कुछ गलत न कर बैठे या उसकी प्रसन्नता इसी में है ये सोचकर उसकी गलत बात को भी मान लेते हैं। आपको ये भी विचार करना चाहिए कि यदि आज आपने अपने बच्चे की इस स्वेच्छाचारिता को नही रोका तो कल जब वह कोई गलती कर बैठेगा तो सबसे पहले वह आपको ही दोष देगा कि आपने उसे यह करने के लिए रोका क्यों नहीं, इस काम के करने के अच्छे–बुरे परिणामों से अवगत क्यों नहीं कराया? और भगवान् न करें कि आपके बच्चे के साथ कोई अप्रिय घटना इस स्वेच्छाचारिता के कारण हो जाए तो आप स्वयं भी अपने आपको कभी क्षमा नहीं कर पाएँगे। जीवन भर यही सोचते रहेंगे कि काश मैं अपने बच्चे को बचपन से ही अच्छे संस्कार दे पाता, उसकी बातों में न आता, उसे अपनी बात समझा पाता। और जब आप अपने बच्चों की बात मान सकते हैं तो आपके अन्दर इतनी क्षमता भी होनी चाहिए कि आप उससे अपनी बात भी मनवा सकें।

एक नया पहनावा मेरे देश की माताओं व बहनों के परिधान के रूप में चल पड़ा है जिसे ––––– कहते हैं। माँ, बहन, बेटी इन शब्दों का प्रयोग जब आप करते होंगे तब साड़ी में लिपटी किसी औरत युवा सूट पहने हुई या फ्रॉक पहने हुई किसी लड़की की काल्पनिक तस्वीर मन में बन जाती होगी, क्योंकि आज तक आपने अपनी माँ, बहन, बेटियों को इसी प्रकार के वस्त्रों में देखा था, लेकिन अब जाने कौनसी हवा इस देश में चल पड़ी है कि स्वतन्त्रता के नाम पर पर महिलाएँ भी स्वच्छन्द हो चली हैं पता नहीं क्या सोचकर मेरे देश की बेटियाँ अनावश्यक नग्नता वाली पोशाक पहनकर घूमने लगी हैं और जब कुछ गलत हो जाए तो कहती हैं कि पोशाक नहीं सोच बदलने की जरूरत है।

हाँ, मैं भी मानता हूँ कि सोच बदलने की आवश्यकता है, लेकिन सोच बदलने की स्थिति आई ही क्यों? क्या वह लड़कियाँ जो ये कहती हैं कि कपड़े नहीं सोच बदलो। उन लड़कियों ने भी अपनी सोच का आकलन किया है? नहीं, अगर करती तो ऐसा भी नहीं कहती कि पुरुषों को अपनी सोच बदलनी चाहिए, लेकिन मैं ये कहता हूँ कि आखिर छोटे–छोटे कपड़े पहनने के पीछे उनकी सोच क्या है? क्या सोचकर वे ऐसे कपड़े पहनती हैं जिनमें से उसके स्तन, पीठ, जाँघें इत्यादि का स्पष्ट आकार नजर आता है। इस तरह के परिधान पहनने की सोच तो सिर्फ यही है कि पूरा पुरुष समाज उन्हें देखे क्योंकि कभी भी सभ्य लड़की ये नहीं चाहेगी कि कोई उसे कामुक दृष्टि से देखें और अगर उनका तर्क यही है कि सोच बदलिए तो फिर हर बात को लेकर अपनी सोच बदलिए जैसे कि यदि कोई आपको गाली बके तो उसे गाली नहीं प्रेम सूचक शब्द समझिए। हत्या, चोरी, डकैती, बलात्कार, आतंकवाद इत्यादि सबको लेकर सोच बदली जाए सिर्फ नग्नता को लेकर ही क्यों? कुछ लड़कियाँ कहती हैं कि हम क्या पहनेंगे ये हम तय करेंगे पुरुष समाज नहीं। बहुत अच्छी बात है आप ही तय करें, लेकिन हम पुरुष भी किस लड़की का सम्मान/मदद करेंगे ये भी हम तय करेंगे, स्त्रियाँ नहीं। और हम किसी का सम्मान नहीं करेंगे इसका ये मतलब नहीं है कि हम उसका अपमान करेंगे, घोर उपेक्षा भी तो कर सकते हैं। इस पर कुछ विवेकहीन लड़कियाँ कहती हैं कि हमें आजादी है, अपनी जिन्दगी जीने की। जी हाँ बिल्कुल आजादी है, ऐसी आजादी सबको मिले, व्यक्ति को चरस, गांजा, ड्रग्स, ब्राउन शुगर लेने की आजादी हो, गाय, भैंस का मांस खाने की आजादी हो, खुलेआम वैश्यालयों में जाने की आजादी हो, यहाँ तक कि वैश्यालय खोलने की भी आजादी होनी चाहिए और पोर्न फिल्म बनाने की आजादी हो, हर तरफ से व्यक्ति को आजादी हो। आप खुद ही विचारिए कि क्या आप हमारी इन बातों को मानेंगे? लेकिन हम आपकी बात को मान लेंगे उसके लिए एक ही शर्त होगी कि आपको एक औरत की गरिमा को समझना होगा। हमारे भारत देश की संस्कृति कहती है **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'** अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। क्या आप स्वयं किसी अर्धनग्न वस्त्र पहनी हुई लड़की को यदि आपकी भाभी बनाने का प्रस्ताव आए तो स्वीकार करेंगी उसे अपनी भाभी बनाना? क्या पसन्द करेंगी कि आपका भाई उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें? क्या आपके घर की बहू आपके पिताजी या अपने जेठ के सामने घर में –––– पहनकर घूमे यह आपको अच्छा लगेगा? जहाँ तक मैं समझता हूँ कोई भी सभ्य घराने की सुशील व संस्कारी लड़की तो खुद ही इस प्रकार के वस्त्र पहनना पसन्द नहीं करेगी और जो लड़कियाँ कहती हैं कि लड़के अपनी सोच बदले। हमारे वस्त्रों पर ध्यान न दें। मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या उन्होंने कहीं भी भारतीय परम्परा में निजी अंगों का प्रदर्शन करने वाले परिधानों को अपनी दादी या नानी या अपनी माँ को पहने हुए देखा है? जबसे टेलीविजन पर फिल्मों का प्रचार होने लगा तो उसमें भी सेंसर बोर्ड अश्लील दृश्यों वाली फिल्मों पर रोक लगा देता था। किसी भी

पुरानी फिल्म को उठाकर देख लो उसमें कहीं भी हीरोइन अर्धनग्न वस्त्र पहनी हुई है क्या? क्यों नहीं है, पता है आपको क्योंकि भारतीय परिवेश ही नहीं है ऐसा। हाँ एकाध हेलन जैसी हीरोइन दिखाई जाती थी वो भी डांस–बार या कैसीनो आदि में काम करने वाली के रूप में दिखाई गई है। किसी अच्छे घराने की बेटी या बहू का रोल कर रही लड़की को, कभी भी अर्धनग्न वस्त्रों में नहीं दिखाया गया है।

लेकिन आज का तो सेंसर बोर्ड ही न जाने किन हाथों में है और न जाने हीरोइन बनने वाली लड़कियाँ भी चंद रुपयों की खातिर क्यों अपने वस्त्र उतारने लगी हैं। अगर ये नग्नता ही आधुनिकता की परिचायक है तो मैं तो कहूँगा कि गाय, भैंस आदि की तरह पूरी नग्न होकर क्यों न रहे। यदि अंग प्रदर्शित करने वाले कपड़ों को पहन कर घर से निकलने में कोई बुराई नहीं है तो बिना कपड़े पहने ही घर से निकलने में क्या बुराई है? मैं मेरी माताओं–बहनों से ये प्रश्न करना चाहता हूँ कि यदि सब कुछ हमारी सोच पर निर्भर है और सोच को ही बदलना है तो फिर लड़का हो या लड़की दोनों ही बिना वस्त्रों के घर के अन्दर–बाहर घूमे? क्योंकि आपकी सोच तो गलत नहीं है? फिर आधे–अधूरे कपड़ों का बोझ भी क्यों शरीर झेले? मेरा कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि जिस प्रकार गली–मोहल्ले में शराब–माँस आदि की दुकान खोल देने पर बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है ठीक उसी प्रकार अंग प्रदर्शित करने वाले वस्त्र पहनकर घूमना भी समाज में यौन–अपराधों को जन्म देता है। फिर चाहे लड़की पहने या लड़का दोनों के लिए ही इस प्रकार का पहनावा गलत है। आज के युग में फेशनलेबल वस्त्र–आभूषण, महँगे मल्टीमीडिया स्मार्ट मोबाइल फोन और नई चमचमाती निजी परिवहन के साधन ही सम्मान के प्रतीक बन गए हैं इसके अतिरिक्त महँगे होटलों में पार्टी, मीटिंग व भेंटवार्ता करना और मदिरापान करना शिष्टाचार बन गया है। हमें दो कदम भी जाना हो तो निजी वाहन की जरूरत होती है। कभी–कभी वाहन के खराब होने पर हम अपना अन्यत्र जाने का कार्यक्रम ही निरस्त कर देते हैं। वर्तमान पीढ़ी की ये सोच बन चुकी है कि ये सब भौतिक साधन आज हमारी सम्पन्नता और शालीनता को प्रदर्शित करने के माध्यम हैं।

पुरातन काल में जहाँ भारत मात्र भौतिक साधनों से नहीं बल्कि आध्यात्मिक साधना के कारण विश्वगुरु कहलाया वहीं वर्तमान काल में भारत का अस्तित्व भौतिक साधनों की चकाचौंध में धुंधला होता जा रहा है। हम अब पूर्व से पश्चिम की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हम जानते हैं कि सूर्योदय हमेशा पूर्व दिशा में ही होता है और अस्त होता है पश्चिम में, मगर पश्चिम की हवा की सम्मोहक शक्ति के कारण हम आज अपना पूर्व छोड़कर पश्चिम की ओर अग्रसर है। भारत देश को तोड़ने की साजिश आज चैनलों, मीडिया के द्वारा रुपयों की चमक में हो रही है व नौकरी, धन्धे के नाम पर, धर्म परिवर्तन का कुचक्र चला। क्लबों, बारों में बाढ़ ला अश्लीलता परोस, व्यसनों को युवाओं के मत्थे मढ़, खाद्य पदार्थों में गौ मांस आदि मिलावट कर जिस भी प्रकार से सम्भव हो उसी प्रकार से विदेशी ताकतें भारतीय संस्कृति की तार को तोड़ने में लगी हुई है और हम भी उनकी चालों में विकास के नाम पर फँसते चले जा रहे हैं। हमने अपनी मातृभाषा, स्वदेशी चिकित्सा पद्धति का लगभग परित्याग कर दिया है, लेकिन यदि हम थोड़ा सा भी गहराई से चिन्तन करते हैं तो पता चलता है कि **अंग्रेजी शिक्षा पद्धति एवं चिकित्सा पद्धति तो अंग्रेजी शासनकाल के दौरान ही भारत में आई है।** उससे पहले क्या तीर या तलवार आदि से घायल होने वाले लोगों का उपचार हमारे वैद्य नहीं करते थे? क्या स्वर्ण आदि की मुद्राओं से भरे राजकोष के गणित का हिसाब–किताब रखने के लिए विदेश से एकाउंटेंट बुलाए जाते थे? भीम की किल्ली, तोप आदि और ऐसे अनेक ऐतिहासिक वस्तु व स्थान हमारे ज्ञान–विज्ञान की पहुँच को दर्शाते हैं जिनके विषय में हमारे बच्चों को पढ़ाया ही नहीं जाता है। हमारे देश का ज्ञान–विज्ञान इतना उन्नत था कि उसके प्रयोग से बनी वस्तुओं से हानि कम और लाभ ज्यादा से ज्यादा ही होता था। पशु–पक्षी आदि भी हमारे संचार आदि साधनों में सहायक थे, लेकिन आज के संचार के साधनों ने इंसान तो क्या बेचारे इन बेजुबान जीवों का भी जीना दूभर कर दिया है और जो इन मोबाइल, सेटेलाइट, इंटरनेट आदि चलाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले टॉवरों में निकलने वाली विकिरणों के दुष्प्रभाव की चपेट में नहीं आते उन्हें खान–पान की बिगड़ी आदतों के कारण लोग मारकर पकाकर खा जाते हैं।

हमें व आप जैसे माता–पिता और समाज सुधारकों को मिलकर बस इसी बात का ध्यान रखना है कि किस प्रकार अपने बच्चों में अपनी संस्कृति व संस्कारों से जुड़ाव बनाएँ ताकि हमारे बच्चे अच्छे व्यक्तित्व से परिपूर्ण समाज व राष्ट्र के लिए हितकारी अच्छे इंसान बन सकें,लेकिन **हम अपने कर्त्तव्यों से इतने भगोड़े हो गए हैं कि गृहस्थ की सफलता का जो दायित्व था हमारे कन्धों पर राष्ट्र के लिए सुप्रजा के निर्माण का उसे ही हम भूल गए हैं।** आज हमारी संस्कृति का जो उपहास या खिल्ली उड़ रही है। उसके लिए कहीं न कहीं हम और हमारी शिक्षा ही जिम्मेदार है और यदि हम अपनी जिम्मेदारी समझकर अपने बच्चों को संस्कारित करने का प्रयास करेंगे तभी तो बच्चे घर में रहने वाले बुजुर्गों की देख–रेख करेंगे नहीं तो आज के आधुनिक परिवेश में तो आप जानते ही हैं कि माता–पिता को वृद्धाश्रमों में रोता–बिखलता छोड़ स्वयं अपने बीबी–बच्चों के साथ या तो विदेशों में पलायन कर जाते हैं या उन्हें एकाकी जीवन जीने के लिए मजबूर कर देते हैं। **अब पहले की तरह परिवारों में प्रेमपूर्ण व्यवहार भी समाप्त होता जा रहा है। माता–पिता से बातचीत भी केवल अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु करते हैं।** यदि हमने अभी से ध्यान नहीं दिया तो रिश्ते केवल मात्र औपचारिकता के ही रह जाएँगे और साल में एक बार ही दुनिया दिखावे के लिए 'मदर्स डे' व 'फादर्स डे' आदि के रूप में सिमट कर रह

जाएँगे। इसलिए आओ हम आज से और अभी से सचेत हो जाए, जागरूक हो जाए ताकि हमारा देश व हमारी संस्कृति फिर से विश्व का मार्गदर्शन करने वाली महान् संस्कृति बन जाए। इसके लिए हमें सामाजिक स्तर पर सर्वप्रथम युवा मानस को प्रतिबन्धित करना होगा। दिनचर्या व पहनावे और परिधानों पर कड़ाई से पालन करने हेतु सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। कानून का भय, शिक्षा में उज्ज्वल संस्कारों की व्यवस्था करनी होगी। पत्र–पत्रिकाओं में मातृशक्ति के भड़काऊ व उत्तेजक तस्वीरों पर प्रतिबन्ध लगाना होगा। टी.वी. चैनलों में बुरा प्रभाव डालने वाले, संस्कारविहीन, कार्यक्रमों पर रोक लगाना होगी तभी हमारी युवा पीढ़ी का जीवन मूल्य सुरक्षित होगा। हमारा राष्ट्र दिन–दोगुनी रात चौगुनी तरक्की करे अर्थात् खूब उन्नत हो इससे बड़ा और क्या सौभाग्य होगा लेकिन चारित्रिक पतन के मूल्य पर यदि ऐसा होता है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य भी नहीं होगा। आज की युवा पीढ़ी को स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता में ही अन्तर नहीं पता है। एक बार मैं अपने किसी परिचित मित्र के घर गया हुआ था तो मैंने उनकी बेटी से पूछा कि बताओ बेटा स्वतन्त्रता का क्या अर्थ है? तो नि:संकोच होकर उसने उत्तर दिया कि घर में या घर के बाहर किसी की रोक–टोक का न होना ही स्वतन्त्रता है। बस स्वतन्त्रता के इसी अर्थ में आज के युवाओं ने अपनी दुनिया समेट रखी है। उन्हें पता ही नहीं है कि जिसे वे स्वतन्त्रता कह रहे हैं वह स्वतन्त्रता नहीं स्वेच्छाचारिता है। उन्हें ये समझाना ही होगा कि जैसे सड़क पर गाड़ी चलते हुए चौराहा पार करते समय यदि रेडलाइट हो जाए तो इसका मतलब है रुको, नहीं तो भयंकर दुर्घटना होने की सम्भावना होती है। क्रॉस करते समय रेडलाइट होने पर यदि आप रुकते हैं तो ये आपने मर्यादा का पालन किया है ये है स्वतन्त्रता और यदि रेडलाइट होने पर भी आपने सड़क को पार किया तो ये आपने मर्यादा का उल्लंघन किया है, ये है स्वच्छन्दता। इसी प्रकार हमारी संस्कृति व हमारे संस्कार हमें मर्यादाओं का पालन करना सिखाते हैं जिनको हमें ध्यान में रखकर चलना चाहिए ताकि हम पराधीन न होने पाए और यदि हम उनसे हटकर चलते हैं तो सम्भव है कि भविष्य में हम पुन: पराधीन हो जाएँगे और ये तो वे भी नहीं चाहेंगे क्योंकि **'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'** अपनी संस्कृति व संस्कारों की पुनर्स्थापना का यह पुनीत व रचनात्मक कार्य युवा पीढ़ी के माध्यम से ही कैसे हो, मातृशक्ति मोह को त्यागकर किस प्रकार इस पुण्य कार्य में सहयोगी हो सकती है आदि विषयों पर विचार–विमर्श कर घिसी–पिटी भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति से दूरी बनाकर पुन: भारतीय संस्कृति व संस्कारों की स्थापना करने का शंखनाद फूँकना होगा इसके लिए समाज व शासन दोनों को मिलकर कार्य करना होगा।

अत: हमें भटकना छोड़कर अपने सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश में लौटना ही श्रेयस्कर होगा नहीं तो संस्कारों के अभाव में हमारी संस्कृति का केवल उपहास ही उड़ाया जाएगा और वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती जाएगी। इसलिए हे देश के कर्णधारो! उठो और जागृत होकर अपने देश और धर्म की रक्षा का प्रण लेकर संस्कारों व संस्कृति के पुनर्निर्माण के कार्य में जुट जाओ 'भारत माँ' तुम्हारे सिराहने खड़ी तुम्हें पुकार रही है। ■

परोपकार में ही जिया करो

संसार में बहुत मुझको, सराहा भी गया है।
पर ऐसा नहीं कि हर समय ऐसा ही रहा है।।
समय अच्छा भी आया, तो विपरीत भी रहा है।
हर दिन के साथ रात का, सम्बन्ध भी रहा है।।
समय ऐसा भी मैंने देखा, है सुनो मेरे प्यारे।
जब दिन में पड़े दिखाई, मुझको अनेक तारे।।
सूरज की उपस्थिति में, जब छाया था अन्धेरा।
ये बात तब की है जब, बिगड़ा था समय मेरा।।
पर नाम उस प्रभु का, कभी भी नहीं विसारा।
प्रत्येक विपत्ति में, भेजा उसी ने सहारा।।
कभी कोई बनके आया, कभी कोई बनके आया।
दु:ख के समय भी मैंने, कभी कष्ट नहीं पाया।।
दुष्टों ने दु:खी मुझे करने को, किये बहुतेरे प्रयास।
पर निराश नहीं कर पाए, व्यर्थ गए प्रयास।।
देते रहे पीड़ा मुझे, वो बन्द करके आय मेरी।
ईश्वर पर छोड़ा मैंने, वही करे गति मेरी।।
विपत्ति में मेरे अपने, बन गए बहुत सारे।
विपत्ति में जो काम आए, वो ही लगते प्यारे।।
ओ३म् नाम है बड़ा सहारा, पार लगाता नैया को।
परीक्षा कर देख लिया, माता–पिता–भैया–सखा को।
सज्जनों के सत्संग का, लाभ सदा लिया करो।
माया मोह में डूबे रहकर, क्यों संसार में मरो।।
पर उपकार ईश्वर करता, यह विश्वास दृढ़ किया करो।
तुम भी हो उसकी सन्तान, परोपकार में ही जिया करो।।

आर्य पी.एस. यादव
प्रधान आर्य, समाज, मण्डीदीप
जनपद : रायसेन (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५००४३७९

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को वैदिक परम्पराओं का मार्ग दिखाया

पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के उपदेशों में कहा गया है कि स्वस्थ समाज की प्रगति में स्वस्थ रीति-रिवाजों एवं सत्य परम्पराओं का विशेष योगदान होता है। सत्य वेदानुकूल परम्परा प्रचलन ऐसे हैं जो सदैव स्वस्थ समाज की प्रगति में सहायक है, किन्तु अन्ध परम्पराओं व रूढ़िवादी प्रचलनों को उखाड़ फेंका जाना चाहिए। समाज का स्वस्थ निर्माण तब तक सम्भव नहीं जब तक कि हम व्यर्थ अविवेकशील सिद्धान्तहीन परम्पराओं से ग्रसित प्रचलनों को दूर करने में आमूलचूल क्रान्ति नहीं करेंगे। पिछड़ेपन की ओर ले जाने वाली अवैज्ञानिक व सृष्टिक्रम के विरुद्ध अप्रासंगिक समझी जाने वाली रूढ़ि मान्यताओं, अन्धविश्वासों से मुक्ति पाने का सर्वप्रथम प्रयास होगा चाहिए।

हम हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य अलगाववादी अन्ध परम्पराओं से लिपटे हुए हैं

आज के सामाजिक व्यवस्था के संस्कारों में झूठी मर्यादा में हिन्दू-मुसलमान-ईसाई क्यों हैं, क्योंकि प्रत्येक मत के बच्चों को माँ के पेट से अपने मतों के विचार दिए जाते हैं और जो-जो बच्चा जिस समूह में जन्म लेता है उसके मत के विचार उसके चित्त पर अंकित हो जाते हैं। वह उसकी परम्परा बन जाती है वह अपने को पूर्ण रूप से हिन्दू-मुसलमान-ईसाई व अन्य समझकर उस मत के विपरीत एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता है। वह उस मत को अपनी मर्यादा समझ लेता है। बस संसार में अशान्ति व मनुष्य को बाँटने का यही कारण है। मानव को केवल वेद वैदिक शिक्षा मार्ग ही एक सूत्र में बाँध सकती है।

ईश्वर ने प्राणिमात्र के लिए इस विशाल सृष्टि का निर्माण किया है और मानव सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। प्रत्येक प्राणी को जीवन जीने के पदार्थ भी बनाए हैं और मानव मात्र को सुखी जीवन की कर्म व्यवस्था में वेदों का ज्ञान भी दिया है और मनुष्य को बुद्धि विशेष देकर कर्म करने में स्वतन्त्र भी किया हुआ है, किन्तु कर्मफल प्रदान करना ईश्वर के पास है। संसार में मानव ने अपने स्वार्थ के लिए मनुष्यों को वर्गवाद, जातिवाद अलग-अलग मतों में बाँटकर अलगाववाद की खाई खोद रखी है। मनुष्य जिस वर्ग में जन्म लेता है उसको गर्भ से ही उस मत के अर्थात् हिन्दू-मुसलमान-ईसाई आदि की मान्यताएँ गर्भ से लेकर आजीवन थोप दिए जाते हैं और मनुष्य ईश्वरीय व्यवस्था को भूलकर आपस में अपने व्यर्थ वर्गवाद को लेकर एक-दूसरे से अपने को बड़ा समझते हैं। आपस में अपने अहं को लेकर विवाद में रहते हैं। इसलिए ईश्वरीय प्रदत्त धर्म वैदिक धर्म जो सृष्टिक्रमानुसार व वैज्ञानिक मार्गदर्शक धर्म है। इस वैदिक धर्म से मनुष्य विमुख नहीं होता तो आज संसार में विकृत स्थिति नहीं होती। वास्तव में इस संसार में न कोई हिन्दू, न कोई मुसलमान, न कोई ईसाई है। यह मनुष्यों द्वारा मनुष्यों पर थोपे मत हैं। मनुष्य मात्र का धर्म व मत तो केवल ईश्वरीय मत वैदिक धर्म है। इस भयंकर अलगाववाद की स्थिति तभी समाप्त होगी जब सृष्टि में प्रलय आएगा। यह विकट नासूर बन गए हैं। यदि मनुष्यों में सुबुद्धि आ जाए तो केवल महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान व आर्य समाज जो मनुष्य मत व वैदिक धर्म व विज्ञान के अनुसार चल रहा है। यदि सारा संसार उक्त ईश्वरीय व्यवस्था में चलने लगे तो वातावरण आज भी बदल सकता है।

भारतवर्ष में धर्म निरपेक्ष मान्यता व कानून से लाभ या हानि

ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान धर्म सदैव एकरस रहता है। धर्म का अर्थ है जिस पदार्थ के गुण, कर्म और स्वभाव सदैव एक समान बने रहें और सभी प्राणियों में परोपकार बना रहे जिसमें निज स्वार्थ न्यून और परमार्थ अधिक हो उसे धर्म कहते हैं। ईश्वर ने सृष्टि के संचालन हेतु वैदिक धर्म सापेक्ष बनाया है। मानव समाज ने विशेषकर भारतवर्ष के धर्म निरपेक्ष कानून मान्यता मानने से सृष्टि प्रलय तक एक अशान्ति की दीवार खड़ी कर दी है और ईश्वरीय नियम का उल्लंघन किया है। भारतवर्ष ने अति उदारता से प्रत्येक मत-मतान्तरों और रूढ़ि परम्पराओं की मान्यता दिलाकर मानव-मानव को बाँट दिया है।

एक उदाहरण जब संसार में कोरोना जैसी भयंकर महामारी फैली थी सब ओर त्राहि-त्राहि मची थी। किन्तु भारतवर्ष के विधर्मी हजारों को जमा करके भयंकर बीमारी को बढ़ा रहे थे और अनर्गल बयान देकर धर्म निरपेक्षता की दुहाई देकर भारत में विष घोल रहे थे। ये कैसी धर्म निरपेक्षता है जिससे मानवता मर रही हो। भारत के लिए यह विचारणीय स्थिति है।

ईश्वर ने सब प्राणियों के सर्वसुख के लिए वैदिक धर्म सापेक्ष ज्ञान दिया है

ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, अग्नि,

वनस्पति अन्य आदि सबके लिए दिए हैं। किसी के लिए कोई भी भेदभाव नहीं रखा है। ईश्वर की सृष्टि रचना अद्भुत है। वह सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक है। इसी प्रकार से वेदों का ज्ञान भी दिया है। वेदों में कोई वर्गवाद, जन्मना जातिवाद, इतिहास, अन्धविश्वास नहीं है और कोई रूढ़ि परम्परा नहीं है। वेदों में सत्य साम्यवाद है, वेदों में कुशल राजनीति नेतृत्व ज्ञान है। अस्तु मानवों ने ईश्वर के स्वरूप को न समझ कर अपने-अपने कथित मत-पंथ बनाकर ईश्वरीय आज्ञा को ठुकरा दिया है। मानव समाज को बाँट दिया है। फलस्वरूप आज भ्रष्ट राजनीति, व्यवसाय, विद्या, काल्पनिक भगवान्, देवी-देवता, भिन्न-भिन्न विचारधाराएँ, व्यावसायिक रूखी शिक्षा पद्धति उत्पन्न करके सात्विक विचारों से मानव को दूर कर दिया है। ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों से ही मानव सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है। इन पदार्थों में कभी भी किसी भी तरह कमी नहीं होती है। इसलिए ईश्वर ने संसार को धर्म सापेक्ष स्वाभाविक रूप से बनाया है। यदि यह बात संसार के लोगों को विशेष भारतवासियों के समझ में आ जाए तो हमारी प्रत्येक समस्या का हल हो जाए। अत: भारतवर्ष, जब तक वैदिक धर्म सापेक्ष देश नहीं बनता तब तक चहुँओर अशान्ति बनी रहेगी।

अन्धविश्वासों की भूल-भुलैया से निकलें

पिछले पाँच हजार वर्षों के इतिहास को भारतीय समाज और संस्कृति का अन्धकार युग कहा जाना चाहिए क्योंकि इस अवधि में अपने भारतीय समाज की स्थिति निरन्तर पतनोन्मुख ही रही। पतनशील प्रवाह इस स्थिति में पहुँच गया था कि इस प्रवाह को रोकने के लिए अठारहवीं शताब्दी में युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने भारत में जन्म लिया और सदियों से चली आ रही धार्मिक, रूढ़ि, सामाजिक कुप्रथाएँ, भ्रष्ट राजनीति सदियों से पराधीनता भारत की इन सबके उन्मूलन के लिए आवाज उठाई, एक सुधारवादी वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। भारतीयों में नई चेतना का संचार हुआ और धार्मिक-सामाजिक- राजनैतिक अराजकता के ठेकेदारों की चूलें हिल गईं। उनको विचारों में परिवर्तन करने में विवश होना पड़ा, किन्तु सभी पूर्वाग्रह से ग्रसित विचारों को पूर्णरूप से दूर नहीं कर सके हैं। जिससे अन्धविश्वासों का चलन अभी भी हमारे समाज को घुन की तरह खा रहा है।

धार्मिक अन्धविश्वास

महापुरुषों को ईश्वर मानकर और उनकी प्रतिमा बनाकर पूजना और उनके आदर्शों व चरित्रों पर न चलकर जनता में भ्रम फैलाना और यह उपदेश देना कि ये कार्य तो कथित ईश्वर ही कर सकते हैं। उन महापुरुषों के चरित्रों की अवहेलना करना आदि देवी-देवताओं के नाम पर बलि देना, धर्म की आड़ में अन्ध परम्पराएँ फैलाना, सिर पर देवता आने का ढोंग, धार्मिक क्षेत्र में ठगी करना, ईश्वर का अवतार लेना मानना, जादू-टोना, भूत-प्रेत का चक्कर, अनेक भ्रमित अन्धविश्वास फैलाकर जनता को ईश्वर से बहुत दूर करना आदि-आदि।

सामाजिक अन्धविश्वास

व्यर्थ जातिवादी छुआछूत मानना, दहेज प्रथा, जादू-चमत्कारों का प्रदर्शन, फलित ज्योतिष का चक्कर, कर्मवादी न बनाकर भाग्यवादी बनाना, अपने कर्मफल का दोष ईश्वर पर देना।

अन्धविश्वास एक सामाजिक कोढ़

पिछड़ेपन का पोषक अन्धविश्वास, शिक्षा में आध्यात्मिक ज्ञान न देकर निरा व्यवसायी बनाना, अवतारों की पलटन, पूर्वाग्रह की अनैतिक परम्परा नहीं औचित्य देखें। विवेकहीन कुप्रचलन, कुण्डली व मुहूर्त का अज्ञान, मृतक भोजन, प्रदर्शन के नाम पर अर्धनग्नता व चुस्त कपड़े, परिवार में बड़ों का आदर न करना, उत्सवों के नाम पर दिखावा, विवाह की गरिमा को ठेस पहुँचाकर, दुर्व्यसनों का सेवन और विलासितापूर्ण कृत्यों पर अनावश्यक अपव्यय कर निर्धन-धनी की खाई, वर-कन्या के गुण-कर्म-स्वभाव न मिलाकर कुण्डली मिलान आदि अनेक कुप्रथाएँ हैं।

राजनैतिक अन्धविश्वास

विद्वान् व सत्यवादी को न जिताकर भ्रष्टाचारी व धनाढ्य प्रभावशाली को नेतृत्व देना अन्धविश्वासी एवं अनपढ़ या जो धर्म का मार्ग नहीं जानते, जड़ व चेतन की परिभाषा नहीं जानते ईश्वर के सत्यस्वरूप को नहीं पहचानते तथा जो स्वार्थी और अहंकारी हो उसको जनता का नेतृत्व करने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसे विचारों वाले प्रजा के, साम्यवाद के दुश्मन तो हो सकते हैं किन्तु सृजन नहीं कर सकते। ■

सच्चे ईश्वर में मन लगा लीजिए

लुट चुका है भारत देश, अब तो इसे बचा लीजिए,
वैर द्वेषों को मिटा आपस में, अब तो गले लगा लीजिए।
ढोंगी पाखण्डियों को छोड़, सच्चे ईश्वर में मन लगा लीजिए,
सच्चा ईश्वर शिव है सभी को छोड़ शिव को अपना लीजिए।
भागवत पुराणों को गले लगा, वेदों की वाणी सब भूल गए,
देश गर्त की ओर बढ़ रहा, पाखण्डी फिर भी पाखण्ड ना छोड़ रहे।
गरीब अनपढ़ लोगों को लालच देकर उन्हें अपना बना रहे,
हमें गरीबों का ध्यान नहीं, हम तो मन्दिरों को बना रहे।
मूर्ति को ईश्वर मान लिया, निशिदिन भोग लगा रहे,
सर्वशक्तिमान् ईश्वर को ये तो भूखा–नंगा समझ रहे।
जगत् पिता परमेश्वर निराकार, कण–कण में समाया, ना समझ रहे,
देश धर्म की चिन्ता नहीं इनको, ये तो विधर्मियों को गले लगा रहे।

राजेन्द्र बाबू गुप्त
प्रधान : आर्य समाज दयानन्द मार्ग, रतलाम
चलभाष : ९०३९५१०७०९

महिला वर्ग विशेष

समाज में नारी की भूमिका

स्वामी हरीश्वरानन्द सरस्वती

८/५४, तेजेन्द्र नगर भाग–७,
चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात
चलभाष : ८१५५०५५२६०

भिन्न-भिन्न विचारकों ने नारी के विषय में अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए हैं, जैसा जिसका अनुभव के आधार पर। जैसे कि :

१. नारी तू नारायणी है।

२. नारी नर की खान है।

३. नारी नरक का द्वार है।

४. नारी तो में तीन गुण, अवगुण भरे अनेक हैं।

५. जहाँ-जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ-वहाँ देवता उत्पन्न होते हैं और वहीं पर देवता वास भी करते हैं।

६. नारी केवल भोग की सामग्री है।

७. यदि नारी नहीं होती तो सृष्टिक्रम आगे नहीं चलता।

८. यदि नारी नहीं होती तो, तो संसार में विवाद यानी झगड़े भी नहीं होते, अधिकतर युद्ध नारी के कारण ही तो हुए हैं और होते ही रहेंगे।

९. नारी बुद्धिमती भी है और भयंकर मूर्ख भी है।

१०. नारी बहादुर भी है और भयंकर भीरु भी है।

११. नारी स्वभाव से झगड़ालू होती है।

१२. नारी अर्द्धांगिनी कहलाती है।

पारिवारिक और सामाजिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो महिला और पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं। शारीरिक रचना भी परमात्मा ने एक-दूसरे के पूरक ही बनाई है। परिवार और समाज एक-दूसरे के बिना चल ही नहीं सकते। परिवार एक बैलगाड़ी के समान है, जिसमें दो पहिये तथा दो ही बैल होते हैं। एक बैल और एक पहिये से गाड़ी नहीं चल सकती इसी प्रकार मात्र महिला या मात्र पुरुष से परिवार या समाज भी नहीं चल सकता। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि सृष्टिक्रम भी नहीं चल सकता।

उपर्युक्त में जो १२ वाक्य प्रस्तुत किए गए हैं, ये सभी अपने-अपने अनुभव के आधार पर ही तो लिखे हैं अर्थात् भिन्न-भिन्न नारियों ने अपने-अपने गुण, कर्म स्वभावानुसार परिवार या समाज में अपने आपको जिस-जिस रूप या स्वभाव में प्रस्तुत किया है, वही-वही रूप परिवार या समाज ने देखा है। अब हम उपर्युक्त की क्रमानुसार चर्चा करेंगे।

१. नारी तू नारायणी है : यदि किसी महिला ने अपने आपको परिवार या समाज के सामने प्रेमालु, त्यागी, तपस्विनी, समर्पण भाव, सहयोग पूर्ण, सहनशील आदि गुणों से परिपूर्ण होकर के प्रस्तुत किया होगा तो यही नारायणी स्वरूप हैं अर्थात् देवी स्वरूप है, जो सभी को कुछ न कुछ देती ही है। देवी या देवता शब्द का अर्थ ही देने वाला या दाता ही तो होता है।

२. नारी नर की खान है : यह वाक्य भी अपने आप में परिपूर्ण है कि यदि नारी नहीं होती तो नर उत्पन्न ही नहीं हो सकते थे। यानी सृष्टिक्रम आगे नहीं चल सकता था। शास्त्रों में नारी को मातृशक्ति अर्थात् जननी कहा गया है जो सन्तानों को जन्म देती है।

३. नारी नरक का द्वार है : किसी विद्वान् ने कहा है कि **पर नारी पैनी छुरी, तीन ठौर से खाय, धन छीजै, यौवन हरे मरे नर्क ले जाय।** यदि किसी महिला ने किसी भी कारण (छल, प्रपंच, लोभ-लालच, उदर पूर्ति या कामना के वशीभूत होकर या अन्य किसी कारणवश आदि से) अपने आपको किसी पर पुरुष के सामने प्रस्तुत किया होगा, तो वह महिला अवश्य ही नर्क का द्वार है तो दोनों ही महिला और पुरुष इस कुकर्म के फल स्वरूप नर्कगामी होंगे।

४. नारी तो में तीन गुण, अवगुण भरे अनेक हैं : प्रत्येक महिला में तीन गुण तो अवश्य ही होंगे (अ) वात्सल्य, (ब) त्याग, (स) समर्पण। बाकी अवगुण तो कितने भी कहे जा सकते हैं। वैसे अवगुण पुरुषों में भी कम नहीं होते।

५. जिन-जिन परिवारों में नारी की पूजा होती है वहाँ-वहाँ देवता उत्पन्न होते हैं और वहीं पर देवता वास भी करते हैं: नारी की पूजा का अर्थ है कि आदर, सम्मान और सत्कार। जिन-जिन परिवारों में महिलाओं का सम्मान, सत्कार और आदर होगा, उन-उन परिवारों में सन्तानें योग्य और संस्कारी होंगी। उन्हीं परिवारों में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी आदि देव स्वरूप महानुभावों का आना-जाना बना ही रहेगा। जब ऐसे-ऐसे महापुरुषों का परिवार में आना-जाना बना रहेगा तो उनके सहवास, प्रवचन आचरण आदि से परिवारों में शुभ संस्कार उत्पन्न होंगे, तो ऐसे परिवारों में सदैव परिवार, समाज, देश और विश्व सुधारक ही उत्पन्न होंगे।

पूर्व काल में नारी को देवी कहा जाता था, तो देवता उत्पन्न होते थे, मुगल काल में नारी को बेगम कहा जाने लगा तो, गुलाम पैदा होने लगे और आजादी के बाद, जब से चलचित्रों का युग आया है तब से नारियों को हीरोइन कहा जाने लगा तब से भड़वे उत्पन्न हो रहे हैं।

६. नारी केवल भोग की सामग्री है : कुछ कामी स्वभाव के व्यक्तियों ने नारी को केवल भोग सामग्री ही माना है अर्थात् काम वासना का साधन और सन्तान उत्पत्ति की मशीन। इसी विषय पर कुछ रसिक स्वभाव के कवियों ने तो इसी विषय पर श्रृंगार रस

की कल्पना कर नारी के विषय में न जाने क्या-क्या लिख दिया है, पाठकगण भली प्रकार जानते हैं।

वैसे नारी ने भी वर्तमान काल में अपने आपको भोग सामग्री बनाने में कोई कसर नहीं रखी है। देश के, विदेश के किसी भी उत्पाद की प्रसिद्धि के लिए नारी अर्द्धनग्न होकर टीवी, पत्र-पत्रिकाओं में अंग प्रदर्शित करती हुई देखी जा रही हैं। जो नारी जितना अधिक अंग प्रदर्शित करती है, उसे उतना ही अधिक धन मिलता है और प्रसिद्धि भी मिलती है। धन और प्रसिद्धि के लोभ में वह अपनी शारीरिक पवित्रता और सतीत्व का सर्वनाश कर लेती है।

रही सही कसर इन फिल्मकारों ने पूरी कर दी कि जो काम महिला केवल अपने पति के साथ करती है जो कि सन्तान उत्पत्ति हेतु एक शारीरिक प्राकृतिक क्रिया होती है, उससे यानी नारी से वह कार्य खुले पर्दे पर फिल्माया जाता है। यह कार्य नारी की सहमति के बिना नहीं किए जा सकते अर्थात् नारी की पूर्ण सहमति होती है। मैंने कभी किसी लेख में किसी अभिनेत्री का साक्षात्कार पढ़ा था, जिसमें उसने एक वाक्य कहा था कि (कोई भी अभिनेत्री कभी भी फिल्मी पर्दे पर तब तक नहीं आ सकती, जब तक कि वह अपने सतीत्व को बर्बाद न कर देती), उनका स्थान तो केवल कोठा ही होता है। ऐसे कई दुष्ट हीरो, दिग्दर्शक, कहानीकार आदि होंगे जो किसी भी अभिनेत्री को पर्दे पर आने का तब तक अवसर नहीं देते जब तक कि उसका भरपूर शोषण नहीं कर लेते और ऐसे ही चरित्रहीन अभिनेत्री (महिला या पुरुष) दोनों को ही समाज अपना आदर्श मानता है और वैसा ही अनुकरण कर उन जैसा ही बनने का प्रयत्न करता है और अपने जीवन को कुसंस्कारों का घर बना लेता है। नारी स्वभाव से कामुक और भोग सामग्री नहीं है, मगर पाश्चात्य चकाचौंध ने शुभ कर्म करने के स्थान पर प्रख्यात होने के लिए, सस्ती लोकप्रियता और धन प्राप्ति हेतु रूपहरी परदे पर आकर ख्याति प्राप्त करना नारी को आसान लगता है, इसलिए उसने अपने शरीर को कामुक, भोग सामग्री बनाकर अपने आपको प्रस्तुत किया है। इसमें लेखक नारी को ही दोषी मानता है। परिवार, समाज, देश और विश्व के प्रति और भी अनेकानेक उत्तरदायित्व निभाने को नारी के पास है। जिन पर आगे चर्चा की जाएगी।

७. यदि नारी नहीं होती तो सृष्टिक्रम आगे नहीं चलता : यह बात सत्य से परे तो नहीं हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो यही यथार्थ है।

८. यदि नारी नहीं होती तो संसार में विवाद यानी झगड़े भी नहीं होते, अधिकतर युद्ध नारी के कारण ही तो हुए हैं और होते भी रहेंगे : यह वाक्य भी यथार्थ से परे नहीं है। राम-रावण युद्ध हुआ तो दो नारियों के कारण हुआ, एक कैकेई, दूसरी सीता। यदि कैकेई ने राजा श्री दशरथजी को वचनबद्ध न किया होता तो राम को वनवास न होता और राम को वनवास न होता तो सीताहरण न होता और सीताहरण न होता तो राम-रावण युद्ध नहीं होता और महाभारत के भीषण युद्ध का कारण भी तो महारानी द्रौपदी ही बनी थी, वे भी तो एक नारी ही थी।

९. नारी बुद्धिमती भी है और भयंकर मूर्ख भी : अतीत में इतिहास के झरोखे से यदि झाँककर देखें तो ज्ञात होगा कि गार्गी जैसी विदुषी नारियों ने धुरंधर विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराया था। उसी देश की वीरांगनाओं ने अपने-अपने देशों के लिए रणकौशल और जौहर दिखला कर इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। जिनमें प्रमुख-प्रमुख नाम निम्न हैं। सती वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई, सती रानी उर्मिला, सती संयोगिता, वीरांगना अच्छन कुमारी, महारानी कर्मादेवी, महारानी पद्मिनी, सारन्धा, सती प्रभावती, सती भगवती, दुर्गावती, महारानी कर्णावती, महारानी लक्ष्मीबाई, भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी, श्रीलंका की प्रधानमन्त्री श्रीमती भण्डार नायके, ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया, ब्रिटेन की ही महिला प्रधानमन्त्री श्रीमती मार्गरेट थेचर आदि ने अपने-अपने देश का शासन सुचारु रूप से चला कर अपने देश का तो नाम सुविख्यात किया ही स्वयं भी अपना नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित करा लिया।

इतिहास प्रसिद्ध शूर्पणखा, पूतना और होलिका आदि की गिनती मूर्खों में ही तो की जाती है। जिन्होंने स्वार्थवश अपने-अपने भाइयों के कल्याणार्थ वे कार्य किए जो उन्हें नहीं करने चाहिए थे।

१०. नारी बहादुर भी है तो भीरु भी है : नारी देश रक्षा और परिवार की रक्षा (विशेषकर पति और बच्चों की रक्षा के लिए) महाकाली और शेरनी बन जाती है। देश रक्षा के लिए जैसे महारानी लक्ष्मीबाई ने रणचण्डी का रूप धारण किया और परिवार रक्षा के लिए तो हर परिवार में माता-बहनों को देखा ही जा सकता है। यदि उनके परिवार तथा बच्चों के प्रति कोई बाहरी व्यक्ति आँख उठाकर भी देखता है तो वे साक्षात् महाकाली का रूप धारण कर लेती हैं और भीरू इतनी कि घर में कसारी, छिपकली, चुहिया आदि के भय से मदद के लिए पति और बच्चों को बुलाती फिरती है और स्वयं डरकर भाग जाती है।

११. नारी स्वभाव से झगड़ालू होती है और असहनशील भी होती है : घर परिवार और अड़ोस-पड़ोस में अधिकतर हम लोग प्राय: देखते-सुनते रहते हैं कि आज इस गली में दो पड़ोसियों में झगड़ा हो गया, कल उस गली में हो गया था। एक मुहल्ले की महिलाएँ दो गुटों में विभाजित हो गईं और मारा-मारी शुरू हो गई, उसकी चुटिया इसके हाथ में और इसकी चुटिया उसके हाथ में, दोनों तरफ से मारा-मारी शुरू हो गई। झगड़ों का कोई विशेष कारण नहीं होता है, बहुत ही सामान्य सी बातें– मेरे घर के सामने तूने कचरा डाला ही क्यों? मेरे घर के सामने तूने पानी डाला ही क्यों? बच्चों की छोटी-छोटी बातों को लेकर भी झगड़ा प्रारम्भ होने में देर नहीं लगती। इस प्रकार के झगड़े असहनशीलता के ही लक्षण तो हैं।

१२. नारी अर्द्धांगिनी कहलाती है : नारी का जब किसी पुरुष के साथ पाणिग्रहण संस्कार हो जाता है तो नारी पति की पत्नी या अर्द्धांगिनी कहलाती है, नारी अर्द्धांगिनी क्यों कहलाती है, यह बात लेखक को कुछ हजम नहीं हुई क्योंकि जैसे पुरुष पूर्ण अंगों से परिपूर्ण है, इसी प्रकार नारी भी अपने अंगों से परिपूर्ण (केवल अपंगता को छोड़कर जो दोनों में हो सकती है।) तो नारी को ही आधे अंगों वाली क्यों कहा गया है?

उपर्युक्त १२ वाक्यों को आधार मानकर हमने नारी के गुणों-अवगुणों पर चर्चा की। अब हम अपने मुख्य विषय पर आते हैं कि समाज में नारी की भूमिका– यह एक ऐसा गम्भीर विषय कि इस विषय के ऊपर जितना भी कहा–लिखा जाए उतना ही कम है। नारी परिवार, समाज, देश, विश्व या यों कहा जाए कि नारी समस्त सृष्टि की आधारशिला है तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जैसा कि नारी के विषय में उपर्युक्त में बहुत से गुणों-अवगुणों पर चर्चा की जा चुकी है। यदि नारी अपने शुभ गुण, कर्म स्वभावानुसार व्यवहार करती है तो वह समाज पर गहरा प्रभाव डालती है तो परिवार, समाज, देश और विश्व सदैव उन्नति और शान्ति के पथ पर सदैव अग्रसर होता रहेगा।

जब कोई नया भवन निर्माण कराया जाता है तो उसकी नींव उचित गहराई से भरी जाती है, ताकि अधिक से अधिक भार और ऊँचाई को सहन कर सके। भवन निर्माण की नींव और नारी के उचित शिक्षण से तुलना करके देखे तो एक ही भाव प्रकट होते हैं कि जितनी भवन की नींव अधिक गहरी होगी उतना ही भवन सुदृढ़ होगा और जितना ही अधिक नारी का उचित शिक्षण (संस्कार) होगा, उतनी ही सुसंस्कारों से युक्त होगी और नारी जितनी ही सुसंस्कारों से युक्त होगी, उतनी ही सुसंगत ढंग से वह समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकेगी।

वर्तमान की सहशिक्षा पद्धति हमारे उपर्युक्त सिद्धान्तों को पूर्ण नहीं कर सकती कि जिससे सुसंस्कार प्राप्त किए जा सकें। आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति में एक डिग्री (एमबीए) यानी मूर्ख बनाओ एसोसिएशन अर्थात् अज्ञानी प्रजा को लोभ, लालच, सुनहरे सपने दिखाकर, अधिक से अधिक कर्जा दिलाकर, विशेषकर नारी वर्ग को प्रभावित कर, घटिया सामान देकर धन कमाना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। ऐसी शिक्षा प्रणाली से संस्कारों का कोई लेना-देना नहीं होता।

हमारे वैदिक संस्कारों की उदरपूर्ति तो हमारी गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही कर सकती है कि जहाँ प्रत्येक नारी (केवल पत्नी को छोड़कर) यदि अपने से आयु में बड़ी है तो माता के समान और सम आयु है तो बहन के समान और यदि छोटी है तो पुत्री के समान की शिक्षा दी जाती है और यदि चाहे किसी दूसरे का पदार्थ कितने भी मूल्य का क्यों न हो हमारे लिए वह तृण के समान हैं। जिसमें सहशिक्षा के लिए कोई स्थान नहीं है। सभी को समान शिक्षण मगर पृथक्-पृथक् स्थानों पर।

जब इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली होगी तब ही नारी अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सही ज्ञान प्राप्त कर सकेगी, तब ही अपने उचित कर्मों की ओर अग्रसर होगी। तब ही वह स्वयं के साथ-साथ परिवार, समाज, देश और विश्व के प्रति सजग होकर, अपने कर्तव्यों का पालन कर सकेगी और अन्त में:

बन जाती हो क्यों अज्ञानी,
भूलकर वह अपना अभिमान।
शिवा, राणा-सी वीर महान्,
तुम्हीं ने उत्पन्न की सन्तान।। ■

यह झण्डा प्यारा ओ३म् का

खुशहालचन्द्र आर्य

द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

घर–घर में लहराए, यह झण्डा प्यारा ओ३म् का।
यह आर्यजनों का झण्डा है, नहीं किसी एक देश व जाति का।।
न टर्की, ईराक, ईरान का, न रूस व हिन्दुस्तान का।
न फ्रांस, चीन, जापान का, न यह झण्डा बर्लिन व रोम का।।
घर–घर में लहराए...।।१।।
इस झण्डे की बड़ी महिमा, साथ गौतम, कणाद की है गरिमा।
इसकी बनी नहीं कभी सीमा, यह झण्डा है सारे व्योम का।।
घर–घर में लहराए...।।२।।
जब आर्य सारा जग होगा, घर–घर में सत्संग-यज्ञ होगा।
तब आनन्द, सुख पग–पग होगा, फैलेगा सुगन्धित धुआँ होम का।।
घर–घर में लहराए...।।३।।
जब मानव का मानव से प्यार होगा, सारा विश्व एक परिवार होगा।
तब सभी कण्ठों से यही उच्चार होगा, यह झण्डा है पूरी मानव जाति का।।
घर–घर में लहराए...।।४।।
इसकी गरिमा का रखो ध्यान, यही है इज्जत यही है भाल।
इसकी रक्षा हेतु कहता 'खुशहाल', बल लगा दो अपने शरीर के रोम–रोम का।।
घर–घर में लहराए...।।५।।

चिन्तन

कैसे रुके भ्रष्टाचार?

मोहनलाल दशोरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

जब सब खाने को तैयार
कौन रहा साहूकार?

देश को स्वतन्त्र हुए ७६ वर्ष हो गए। केन्द्र व राज्य सरकारें कई बदल गईं। भ्रष्टाचार व निर्धनता मिटाने का कहने और प्रयास करने वाले कई स्वच्छ छवि व राष्ट्र सेवा में समर्पित देशभक्त और सेवाभावी जनप्रतिनिधि कर्णधार काल के गाल में समा गए, मिट गए परन्तु भ्रष्टाचार और धनी–निर्धन के बीच की खाई नहीं मिटी। ज्यों–ज्यों दवा की, दर्द बढ़ता गया। वेद बिचारा क्या करे। कब तक दवा लगाए। और आज तो भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया क्योंकि रिश्वत देने वाले की गरज और लेने वाले का स्वार्थ बराबर पावरफुल है। पचास–साठ साल पहले व आज के कार्य व्यवहार को देखा जाए तो यह रोग (भ्रष्टाचार) पहले से कई गुना बढ़ गया है क्योंकि देने वाले से अधिक शातिर चतुर चालाक व होशियार लेने वाले बनते जा रहे हैं। शिकायत, धरपकड़ व छापे पड़ने पर भी कारोबार फल–फूल रहा है। जहाँ सेटिंग का फार्मूला काम करता है वहाँ कोई हथेली नहीं लगा सकता। हम देख रहे, सुन रहे हैं कि नेता, मन्त्री, सन्त्री, सांसद, विधायक हो या सीईओ, अफसर तथा कर्मचारी, शासकीय–अर्धशासकीय, प्रायवेट, ऑनरेरी अथवा दलाल, बिचौलिये, ठेकेदार, कामदार या सुपरवाइजर कौन मौका चूकता है। पाँच–दस ईमानदार हों सौ में से तो उनकी कौन चलने देता या उन्हें कौन पूछता है? पड़े रहो लूप लाइन में या ट्रांसफर पर ट्रांसफर। नियम का अडंगा लगाकर काम रोकने वाले फेल हो जाते हैं। और पैसा लेकर रास्ता निकालने वाले पास, पूजे–पूछे जाते हैं। किसी विभाग विशेष की नहीं, किसी वर्ग विशेष की भी नहीं परन्तु यह संक्रामक रोग असाध्य होता जा रहा है। परसेंटेज, कमीशन, चाय–पानी, मिठाई, नजराना, उपहार, भेंट, लाभ–शुभ कई नाम हैं।

केन्द्र व राज्य सरकारों की जन कल्याणकारी योजनाएँ बड़ी कारगर, लाभप्रद व आमजन की हितैषी, मददगार और विकासवादी है परन्तु निर्धन, आमजन, पिछड़े तबकों के लोगों तक पहुँचने के पहले ही बिचौलिये अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं या परसेंटेज जमा करा लेते हैं तो पूरा लाभ पात्रजन तक नहीं पहुँच पाता है। यह बात पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी ने भी स्वीकार की थी कि एक रुपये में से सिर्फ १५ पैसे ही पात्र तक पहुँच पाता है। जैसा कि उन्होंने मन्दसौर कॉलेज ग्राउंड सभा में कहा था।

सम्भावित भ्रष्टाचार के कुछ उदाहरण

१. एक भवन का निर्माण निजी व्यक्ति ५० लाख में ठोस कर लेता है। वहीं सरकारी ठेके में डबल कीमत में क्यों बनती है? तथा उद्घाटन के पूर्व या दो–चार साल में जीर्ण–शीर्ण हो जाती है या गिर जाती है। पुल, सड़क बनते–बनते धराशायी हो जाते हैं।

२. उचित मूल्य का राशन, चावल अवैध तरीके से बेचे जाते पकड़ाए जाते हैं। राशन की दुकान चलाने वाले रोड़पति से करोड़पति, विशाल भवनों के स्वामी कैसे बन जाते हैं?

३. आंगनवाड़ियों, मध्याह्न भोजन, छात्रावासों में कागजी खानापूर्ति होकर बजट का सफाया हो जाता है।

४. कूपन से मिलने वाला घासलेट मशीनों, ट्रैक्टरों में काम आता है। राशन बाजार में आ जाता है। खानापूर्ति मात्र।

५. शासकीय खरीद व पूर्ति में आँकड़ों का खेल होता है। हाई परचेज पर हल्का सामान सप्लाई होता है। कमीशन का खेल।

६. सरकारी गाड़ियाँ अधिकारियों, मन्त्रियों, नेताओं के व्यक्तिगत, गैर सरकारी कामों में दौड़ती रहती है। लॉगबुक की पूर्ति कर ली जाती है सरकार के माथे पर।

७. कई लोगों की डायरियाँ भी दौरा करती हैं। पर्चियाँ बनती रहती हैं और टी.ए. मेडिकल क्लेम बन जाते हैं।

८. चुनाव के समय शराब, साड़ियाँ, रुपये आदि बाँटे जाते हैं।

ऐसे कई रास्ते शासकीय धन, जन धन का दुरुपयोग या भ्रष्टाचार में खपा होने के निकल जाते हैं जिन्हें जानते और समझते सब हैं परन्तु पकड़ नहीं पाते, रोक नहीं पाते।

भ्रष्टाचार तभी रुक सकता है जब हर एक देने वाले का और लेने वाले का नैतिक बल यानी मन (आत्मबल) इतना दृढ़ हो कि वे इसे पाप कर्म समझें। **'न खाऊँगा और न खाने दूँगा'** सब पर अडिग हो। क्या यह सम्भव है? ■

महर्षि दयानन्दजी का सामाजिक चिन्तन

(जनवरी अंक पृष्ठ ३० से आगे)

३. वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थक– यद्यपि स्वामी दयानन्द **जातिवाद** तथा **अस्पृश्यता** आदि कुप्रथाओं के प्रबल विरोधी थे तथापि वे **वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थक** थे। वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थक होने पर भी प्रचलित जन्मना नीति व्यवस्था का विरोध इस बात पर करते थे कि **'वर्ण कर्म के आधार पर निश्चित किया जाना चाहिए, न कि जन्म के आधार पर।'** वे कर्म के साथ–साथ गुणों एवं प्रकृति का भी ध्यान रखने को कहते थे। यह सर्वविदित है कि 'आर्य समाज' वर्णाश्रम–व्यवस्था का इच्छित रूप प्राप्त नहीं कर सका, परन्तु जन्मना जातिवाद से उपजे दुष्परिणामों को दूर करने में अवश्य सफल हुआ है।

४. मूर्तिपूजा का विरोध– राजा राममोहन राय की भाँति स्वामी दयानन्द भी मूर्तिपूजा का विरोध किया करते थे। वे अन्धविश्वास तथा पाखण्ड को मूर्तिपूजा के द्वारा ही जन्मा मानते थे। इसलिए वे मूर्तिपूजा के प्रबल विरोधी थे। उनका कहना था– ''यद्यपि मेरा जन्म आर्यावर्त में हुआ है और मैं यहाँ का निवासी भी हूँ...'' परन्तु मैं पाखण्ड का विरोधी हूँ और यह मेरा व्यवहार अपने देशवासियों तथा विदेशियों के साथ समान है। मेरा मुख्य उद्देश्य मानव जाति का उद्धार करना है।' वे इस पर प्रकाश डालते हुए आगे कहते हैं कि **वेदों में मूर्तिपूजा की आज्ञा नहीं है। अतः मूर्ति पूजन में आज्ञा–भंग का दोष है। इसलिए इसे मैं धर्म विरोधी कृत्य मानता हूँ।**

५. नारी अधिकारों के रक्षक– स्वामी दयानन्द को भारतीय समाज में नारी की गिरती हुई स्थिति ने व्यथित कर दिया था। वे नारी के उत्थान के लिए मनुस्मृति में निहित इस श्लोक को दोहराया करते थे **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।''** (मनुस्मृति ०३/५६) अर्थात् ''जहाँ नारी की

डॉ. सत्यदेव सिंह

५०७, गोदावरी ब्लॉक, अशोका सिटी, गोवर्धन चौक, कृष्णा नगर, मथुरा–३८१००४ (उ.प्र.) चलभाष : ९९९७९८९९६३, ८६३०५०६१०५

पूजा है, वहाँ देवता निवास करते हैं।'' उन्होंने पर्दा प्रथा, अशिक्षा तथा नारी की उपेक्षित और विपन्न होती स्थिति का घोर विरोध किया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने अनेक नगरों में **आर्य कन्या स्कूलों की स्थापना** की। इस प्रकार उन्होंने **स्त्री शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार भी किया।** उन्होंने नारी को समान अधिकार दिलवाए। नारी से

सम्बन्धित अनेक कुप्रथाओं के विरुद्ध आन्दोलन चलाकर आर्य समाज ने स्त्रियों को समाज में उच्च स्थान दिलवाया। इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने नारी उद्धार के लिए अनेक प्रयत्न किए।

६. आर्य भाषा व शिक्षा का प्रचार– स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज के सर्वांगीण विकास के समर्थक थे। वे शिक्षा का ऐसा रूप चाहते थे जिससे बौद्धिक के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास भी हो। इसलिए वे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विरुद्ध थे। **वे गुरुकुल शिक्षा की व्यवस्था पर जोर देते थे।** वे **अनिवार्य** और **निःशुल्क शिक्षा के समर्थक** थे। वे स्वयं गुराजती होते हुए भी **आर्य भाषा के समर्थक** थे। इसलिए उन्होंने अपनी समस्त रचनाएँ आर्य भाषा में कीं।

एक बार उन्हें पुस्तकों के अनुवाद अन्य भाषा में करने को कहा गया, जिससे आर्य भाषा न जानने वालों को भी लाभ पहुँचे। उन्होंने आर्य भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा– ''अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। नागरी के थोड़े से अक्षर थोड़े दिनों में सीखे जा सकते हैं। जो आर्य भाषा सीखने में थोड़ा भी श्रम नहीं कर सकता, उससे और क्या आशा की जा सकती है? उसमें धर्म की लगन है, इसका क्या प्रमाण है? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं, परन्तु **दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का प्रचार होगा। मैंने सम्पूर्ण आर्यावर्त में भाषा के सभ्य सम्पादन के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्य भाषा में लिखे और प्रमाणित किए हैं।''** इस प्रकार दयानन्दजी ने भविष्य पर दृष्टि रखते हुए हिन्दी को मातृभाषा के रूप में अपनाया।

इस प्रकार दयानन्द एक महान् सुधारक, देशभक्त तथा ईश्वरीय दूत के रूप में प्रकट हुए। उनके द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' भी भारत में उनके सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार कर रही है। उनके सामाजिक विचारों एवं समाज उत्थान हेतु किए गए कार्यों का मूल्यांकन करने पर यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि **'दयानन्द उच्च श्रेणी के निर्भीक दूत एवं समाज सुधारक थे।'**

७. स्वाधीनता संग्राम के पोषक– जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत की स्वाधीनता का प्रथम संग्राम सन् १८५७ में प्रारम्भ हुआ। उस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती की आयु ३३–३४ वर्ष के लगभग थी। वे सच्चे गुरु से ज्ञान प्राप्त करने की

तलाश में पर्वतीय व मैदान के क्षेत्र में भ्रमण कर रहे थे। सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम से ठीक पूर्व से अर्थात् मई १८५६ से मार्च १८५७ तक स्वामीजी उसी प्रदेश में कानपुर और बनारस के मध्य विचरण कर रहे थे, जहाँ उस क्रान्ति का स्वरूप सबसे उग्र रूप में प्रकट हुआ था।

क्रान्ति की तैयारियाँ मार्च १८५७ तक पूरी होकर एक साथ उठने की तिथि भी निश्चित हो चुकी थी। **इस क्रान्ति के मुख्य नेता नाना साहब पेशवा अजीमुल्ला को साथ लेकर तीर्थयात्रा के बहाने उस तैयारी का निरीक्षण करने उसी माह निकले थे तथा उनके सैकड़ों दूत क्रान्ति का सन्देश लेकर साधु–फकीरों के वेश में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए रवाना हुए थे, उसी समय स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी बनारस का गंगा तट छोड़कर नर्मदा के तट की ओर बढ़ता पाते हैं।**

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्यों व साथियों में उनके सर्वाधिक विश्वस्त और निकटस्थ मुख्यतः दो व्यक्ति थे– (१) श्यामजी कृष्ण वर्मा और (२) कृष्णसिंह बारहठ। ये दोनों ही भारत में पहले क्रान्तिकारियों में थे। **श्यामजी को लन्दन (यूरोप) जाकर** पढ़ाने और वहाँ के वातावरण का प्रथम श्रेणी का ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा तथा व्यवस्था स्वयं स्वामी दयानन्द ने ही की थी। **कृष्णसिंह बारहठ को राजस्थान** के राजाओं को जगाने के लिए प्रेरित किया था। कृष्णसिंह बारहठ, उनके पुत्र केसरीसिंह और **जोरावरसिंह तथा पौत्र प्रतापसिंह आदि ने** भारत की **स्वाधीनता के लिए बहुत ही क्रान्तिकारी प्रयत्न किए और बलिदान दिए।** यह सब प्रथम स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है, जो अत्यन्त रोमाञ्चकारी इतिहास है।

यद्यपि सन् १८५७ के स्वाधीनता संग्राम (क्रान्ति) में कोई विशेष सफलता नहीं मिली, किन्तु स्वामी दयानन्द निराश नहीं हुए और उन्होंने अपने लोगों को यह बात समझाई कि अनेक वर्षों की पराधीनता से छुटकारा सिर्फ एक संघर्ष से नहीं मिल सकता, इसके लिए भी समय लगता है और बार–बार यत्न करना पड़ता है।

इसके बाद स्वामीजी ने लोगों से यह भी कहा कि उन्हें दुःखी नहीं होना चाहिए, बल्कि प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि स्वतन्त्रता का संघर्ष अब बड़े स्तर पर शुरू हो गया है। इस प्रकार स्वामीजी ने लोगों का उत्साहवर्धन किया और उनमें नई ऊर्जा का संचार किया।

स्वाधीनता संग्राम में स्वामी दयानन्द के योगदान को देखते हुए भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था– **''भारत की स्वतन्त्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने ही डाली थी।''**

८. बाल विवाह का विरोध– जब दयानन्द सरस्वती समाज में सुधार करने का काम कर रहे थे तो उस समय समाज में बाल विवाह की प्रथा व्याप्त थी और ज्यादातर लोग कम उम्र में ही अपने बच्चों का विवाह कर देते थे, इससे न सिर्फ लड़कियों को शारीरिक कष्ट होता था बल्कि उनका शोषण भी किया जाता था, जिसको देखकर स्वामीजी ने शास्त्रों के माध्यम से लोगों को इस प्रथा के खिलाफ जगाया और बताया कि वैदिक शास्त्रों के अनुसार मानव जीवन में प्रथम २५ साल अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उनके अनुसार बाल विवाह होता है तो मनुष्य का शरीर निर्बल हो जाता है और निर्बलता की वजह से उसकी समय से पहले मृत्यु हो जाती है।

९. सती प्रथा का विरोध– स्वामी दयानन्दजी ने समाज में फैली अमानवीय कुप्रथा (सती प्रथा) का भी जमकर विरोध किया था, उस समय पति की मौत के बाद पत्नी को उसकी चिता के साथ जीवित प्राण त्यागने की अमानवीय कुप्रथा थी। जिसके खिलाफ स्वामी दयानन्दजी ने अपना स्वर मुखर किया, सम्पूर्ण मानव जाति को प्रेम आदर का भाव सिखाया और परोपकार का सन्देश दिया।

१०. विधवा पुनर्विवाह को लेकर लोगों को किया जागरूक– आज भी देश के पिछड़े क्षेत्रों में विधवा पुनर्विवाह को लेकर लोगों की सोच नहीं बदली है, लेकिन उस समय तो पति की मृत्यु के बाद विधवा स्त्रियों को समाज में कई तरह की पीड़ा सहनी पड़ती थी। यहाँ तक कि उन्हें प्राथमिक सामान्य मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया जाता था, जिसका स्वामीजी ने घोर विरोध किया। विधवा स्त्रियों को दी जाने वाली अमानवीय पीड़ा की घोर निन्दा की। नारियों के सम्मान सहित पुनर्विवाह के लिए अपने विचार लोगों के सामने रखे और इसके लिए लोगों को जागरूक भी किया।

११. स्वामीजी ने पढ़ाया एकता का पाठ– स्वामी दयानन्दजी ने लोगों को एकजुट होने का सन्देश दिया और इसके महत्व के बारे में बताया। स्वामीजी सभी धर्म के लोगों को आपस में भाई–चारे के साथ मिल–जुलकर रहने के लिए प्रेरित करते थे। स्वामीजी का मानना था कि आपसी लड़ाई का लाभ अन्य पक्ष उठाता है। इसलिए आपस में मिल–जुलकर रहने की आवश्यकता है। इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती का यह नारा था कि सभी मत–पन्थों के अनुयायी एक ध्वज तले एकत्रित हो जाएँ, ताकि आपसी गृहयुद्ध की स्थिति से बचा जा सके और देश में एकत्र की भावना बनी रहे।

१२. सभी वर्गों को समान अधिकार दिलाने के लिए किया संघर्ष– स्वामी दयानन्द सरस्वती जातिवाद और वर्णभेद की कुप्रथा के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने सभी वर्गों के लोगों को समान अधिकार दिलवाने के लिए अपना स्पष्ट मुखर किया। स्वामीजी का मानना था कि चारों वर्ण केवल समाज को ठीक तरीके से चलाने के लिए अभिन्न अंग हैं, जिसमें कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है, सभी बराबर हैं।

१३. महिला शिक्षा, सुरक्षा और नारी सशक्तिकरण पर दिया जोर– स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी शक्ति का समर्थन किया और महिलाओं की शिक्षा और सुरक्षा को लेकर शंखनाद किया। उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुष के बराबर के अधिकार मिलने चाहिए और समाज में महिलाओं को पुरुष के समकक्ष मानना चाहिए। ■

श्रेष्ठ कर्म से जीवन सफल व मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थ : कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, कर्म के फलों में कभी नहीं... इसलिए कर्म को फल के लिए मत करो।

यह श्री भगवत्गीता के दूसरे अध्याय का ४७ वां श्लोक है। कौरव व पाण्डवो के युद्ध के अवसर पर अर्जुन को वैराग्य हो रहा था उस समय भगवान श्रीकृष्ण ने कर्तव्य का बोध कराते हुए कहा कि कर्म में ही हमारा अधिकार है। कर्म के फल में नहीं है। कर्म के फल की चिंता न करते हुए कर्म करने की चिंता करनी चाहिए, तभी जीवन सफल व मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है। कर्म का ही जीवन में महत्व है उसका फल देने का अधिकार परमपिता परमेश्वर के पास है। जैसा कर्म करेंगे ईश्वर हमारे कर्म के अनुसार ही फल देता है। अच्छे-अच्छे कर्म करने पर श्रेष्ठ फल मिलेंगे और गलत कर्म करने पर उसका फल भी उसी के अनुसार निर्धारित होता है। वेद में भी कर्म करने के महत्व का विश्लेषण करते हुए ऋग्वेद के ४०वें अध्याय के मंत्र २ में आया है :-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविवेच्छतं शतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

अर्थात् इस संसार में धर्मयुक्त निष्काम कर्मों को करते हुए सौ वर्ष तक जीवन जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार जो धर्मयुक्त कर्मों में लगा रहता है, जो अधर्मयुक्त कर्मों में अपने को नहीं लगाता। कर्म की महत्ता सभी धर्मों, मतों में पहचानी गई है। आखिर ऐसा क्यों? मनुष्य को चाहिए कि वह कर्म करता हुये ही जीवन जीयें। यदि वह कर्म नहीं करता है तो उसका जीवन निरर्थक है। यह जीवन कर्म करने के लिए ही दिया गया है। सर्वथा 'मम' 'अहं' को छोड़कर कर्म करेंगे तो तेरे ऐसे कर्म कभी बन्धनकारक नहीं होंगे। ऐसे निष्काम कर्म में कभी मनुष्य में आसक्ति नहीं होगी। उपर्युक्त मंत्र का शाब्दिक अर्थ है:- 'मनुष्य इस संसार में कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की कामना करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। ऋग्वेद के मंत्र ने श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोक **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** को गौरवान्वित किया है। इसी के साथ गोस्वामी तुलसीदास ने भी जीवन कर्म के महत्व का विश्लेषण करते हुए लिखा है-

'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं, सो तस फल चाखा।'

संसार में कहा जाता है और कभी-कभी यही कह देते हैं- इसका तो कर्म ही ऐसा है! इसी को गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्पष्ट किया कि इस संसार में कर्म की ही प्रधानता है यह कर्म को जैसा करेंगे वैसा ही चखेंगे अर्थात् फल मिलेगा ।

इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के निष्काम कर्म का संदेश देने के साथ ऋग्वेद में भी निष्काम कर्म की प्रधानता को गौरवान्वित करते हुए तुलसीदास जी के वाक्य को आत्मसात् करने के साथ वेद मंत्र को उपनिषदों में ईशोपनिषद के ४०वें अध्याय का दूसरा मंत्र **'कुर्वन्नेवेहिकर्माणि'** मंत्र से परिपूर्ण करके कर्म की प्रधानता को जीवन में अवतरित करने का संदेश दिया है। अब प्रश्न उठता है कि कर्म क्या है? कर्म का शाब्दिक अर्थ है साधारण बोलचाल की भाषा में 'कर्म' का अर्थ होता है **'क्रिया'**। व्याकरण में क्रिया से निष्पाद्यमान फल के आश्रय को कर्म कहते हैं। 'राम घर जाता है' इस उदाहरण में 'घर' गमन क्रिया के फल का आश्रय होने के नाते 'जाना क्रिया' का कर्म है। यह कर्म प्राणियों द्वारा जो किया जाए वह कर्म होता है और जिसको किए बिना प्राणी एक क्षण भी नहीं रह सकता है। वह तीन प्रकार का है। १. शारीरिक, २. वाचिक, ३. मानसिक। इसको भी तीन रूपों में समझा जा सकता है- आगामी, संचित और प्रारब्ध, तीन प्रकार के कर्म होते हैं। ज्ञान की उत्पत्ति के पश्चात् ज्ञानी के शरीर के द्वारा जो पाप-पुण्य रूप कर्म होते हैं, वे आगामी कर्म के नाम से जाने जाते हैं। अनंत कोटि जन्म में पूर्व में अर्जित किए हुए कर्म जो बीजरूप से स्थित हैं, उन्हें संचित कर्म कहते हैं।

महाभारत में आया है-

'आत्मनाप्रतिकूलानिपरेषां न समाचरेत्'

अर्थात् जो अपनी आत्मा को ठीक न हो वह दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए, इसीलिए अच्छे कर्म वो होते हैं जिनको करने के बाद आपको न तो भय लगता है और रात को चैन और आनंद की नींद आती है। बुरे और अच्छे कर्मों का फैसला दो प्रकार से होता है। एक तो सरकार और समाज फैसला करता है और दूसरा भगवान् फैसला करता है। श्रीमद्भागवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने कर्म व अकर्म का भी उपदेश देते हुए कहा है

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।।

(गीता - ४/१६)

कर्म क्या है और अकर्म क्या है? इस प्रकार का निर्णय करने में बुद्धिमान पुरुष भी मोहित हो जाते हैं। इसलिए हे अर्जुन! वह कर्म-तत्व मैं तुझे भलीभाँति समझाकर कहूँगा, जिसे जानकर तू अशुभ कर्म से अर्थात् कर्मबंधन से मुक्त हो जाएगा। वैदिक विद्वानों व चिन्तकों ने भी इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि कर्म ही हैं जो व्यक्ति को पुण्य देते हैं या पाप देते हैं। पुण्य बाँधता है स्वर्गों में और भोगों में भटकाता है; पाप बाँधता है नरकों में

तथा नीच योनियों में, दु:खों में भटकाता है, लटकाता है। कर्म किए बिना हम रह नहीं सकते। सब कर्म छोड़कर आलसी होकर बैठे रहें, फिर भी कुछ-न-कुछ मन से, तन से कर्म होंगे ही। कर्म के पलायन से कर्म का त्याग नहीं होता और कर्म करते रहने से भी कर्म का त्याग नहीं होता, कर्म करने में केवल सावधानी रखनी चाहिए। जैसे किसी घोड़े या हाथी को 'हार्टअटैक' आया हो, ऐसा कभी सुना है क्या? मनुष्यों को ही क्यों आता है? क्योंकि मनुष्य ने जिम्मेदारी और कर्म में की गलती अपने पर थोप दी है। फलेच्छा, ममता और आसक्ति के कारण ही कर्म बाँधते हैं। फलेच्छा, ममता और आसक्ति बिना के जो कर्म हैं, वे कर्ता को नैष्कर्म्य सिद्धि - ईश्वर से जोड़ते हैं। ईश्वर से जोड़ देते हैं यह भी कहने मात्र को है, वास्तव में हर जीव ईश्वर से जुड़ा है। हम ईश्वर से न अलग थे,न है, नहीं हो सकते । फिर भी कर्मफल-लोलुपता ने हमको ईश्वरीय सुख से वंचित कर दिया। ईश्वरीय सुख पाने का सुंदर उपाय है कि फल की इच्छा, ममता और आसक्ति न हो। इसलिए भगवान श्री कृष्ण कहते है क्रिया अर्थात् कर्म, अकर्म एवं विकर्म- ये सब भाव के अनुसार होते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि श्रीमद्भागवद्गीता के दूसरे अध्याय का ४७वाँ श्लोक

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥'

अर्थ : कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, कर्म के फलों में कभी नहीं... इसलिए कर्म को फल के लिए मत करो। हम सबको जीवन में श्रेष्ठ कर्म करने का उपदेश देता है। यही श्रेष्ठ कर्म व संस्कारों से हमारा जीवन सफल हो सकता है इससे जीवन में सफल होते-होते मोक्ष मार्ग के अनुसरण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। ■

पाठकों के पत्र

आदरणीय शर्माजी,
नमस्ते

श्री सोहनलालजी शर्मा के द्वारा मुझे वैदिक संसार के विशेषांक की दो प्रतियाँ प्राप्त हुईं, धन्यवाद। विशेषांक देखकर स्तंभित रह गया। अत्यंत आकर्षक, व्यापक विषय सामग्री को समाहित किये हुए यह एक अभूतपूर्व आजीवन पीढ़ी दर पीढ़ी संग्रहणीय ग्रन्थ है। आपने इस पावन कार्य के लिए तन-मन-धन से कितना पुरुषार्थ किया है, सोचकर आश्चर्य होता है। आप महान् ऋषिभक्त हैं। आज की तारीख में आप जैसा आर्य समाज की दिन-रात सेवा करने वाला व्यक्ति होना दुर्लभ है। आप मेरे लिए अभिनन्दनीय हैं, आदरणीय हैं। परमपिता परमेश्वर आपको स्वास्थ्य और दीर्घायु दे।

बालकृष्ण गुप्त *(ग्वालियर) से.नि. संयुक्त कलेक्टर*

आदरणीय सुखदेव जी शर्मा
प्रकाशक वैदिक संसार

आपके द्वारा अथक प्रयास करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २०० वर्ष जन्म जयन्ती उपलक्ष्य में वैदिक संसार विशेषांक निकाला गया। अंक वास्तव में बहुत ही अद्भुत और अकल्पनीय है। विशेषांक में वैदिक मन्तव्यों तथा महर्षि दयानन्द जी के कार्यों और विचारों को एक पुस्तिका में सचित्र समाविष्ट करते हुए आपने एक प्रेरणादायी कार्य किया है। आप निरन्तर कई वर्षों से वैदिक संसार पत्रिका का कुशल प्रकाशन कर रहे हैं। जिसमें वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं को शास्त्रोक्त कैसे निपटा जा सकता है, ऐसे समस्त विचारों का समावेश आपकी पत्रिका में मिलता है। इसके अलावा अनेक विद्वानों के सारगर्भित लेखन से आप सभी को लाभान्वित कर रहे हैं। आर्य समाज धार आपके दीर्घायु जीवन और अच्छे स्वास्थ्य की कामना परमपिता परमेश्वर से करता है। आप इसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी के सच्चे सैनिक बनकर कार्य करते रहें। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, सादर नमस्ते।

आर्य लाखनसिंह ठाकुर *(प्रधान, आर्य समाज, धार)*

व्यंग्य/कटाक्ष

आध्यात्मिक बिजनिस

सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी

अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अ.जा. बालक छात्रावास बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

आध्यात्मिक बिजनिस से जिसका प्यार।
सम्पत्ति उसे खूब मिले हो बेड़ा पार॥

पूजा सामग्री की होगी भरमार।
मन्दिर मालिक के पास वाहन हो कार॥

घर-घर बुलाते करते सत्कार।
रोज संस्कार सम्पन्न करो हो उद्धार॥

तय करो दक्षिणा का कितना हो आकार,
मूर्तिपूजा का यही है सार॥

मीरा सूर तुलसी नानक कबीर उदार।
सन्त रविदास जैसी भक्ति कर नहीं सकते यार॥

यजमान को खूब फूला ऐसे दो विचार।
चढ़े चढ़ोतरी चमक उठे घर-द्वार॥

अड़सठ तीर्थ चारों धाम बढ़े कारोबार।
तैंतीस कोटि देवताओं की लम्बी लिस्ट अपार॥

अन्तर्मुखी बनना मुश्किल बाहर मुखी में सार।
निराकार भगवान है, ऐसा समझना बेकार॥

कलयुग में पैसा मेरा परमात्मा, पत्नी मेरा गुरु।
बाल बच्चे सालिगराम पूजा किसकी करूँ॥

आप यजमान को बली का बकरा बनाओ यार।
देखो 'सुन्दर' तुम्हारी खूब चलेगी कार॥

स्वास्थ्य विशेष

गर्मी में रखें स्वास्थ्य का विशेष ध्यान

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

गर्मी का कालखण्ड प्रारम्भ हो चुका है, तेज हवाएँ, लू का चलना, पसीने वाली गर्मी, तेज धूप और ऐसे कालखण्ड में विभिन्न वायरस वैक्टेरिया व मच्छर, मक्खी न जाने कितने छोटे-छोटे उड़ने वाले कीटाणु वातावरण में उत्पन्न होने लगते हैं यह विभिन्न जीवाणुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने में सहायता करते हैं साथ में मनुष्य शरीर में विभिन्न प्रकार के संक्रमण से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी हो जाती है, गर्मी में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए आयुर्वेद में वर्णित विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थ, फलों के रस जैसे नारियल पानी, तरबूज का रस, आम का पना, व्यसन रहित पदार्थों से निर्मित ठण्डाई/शिकंजी, सत्तू का शर्बत, खीरा और पुदीने का रस, एलोवेरा का रस, आँवले का रस, विभिन्न फलों का रस आदि से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है तथा शरीर में विभिन्न वायरस वैक्टेरिया जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता विकसित होती है तथा गर्मियों में पित्तदोष को सन्तुलित रखता है, साथ ही यह ठण्डक की अनुभूति करवाता है:-

नारियल पानी:- नारियल पानी विभिन्न खनिजों और इलेक्ट्रोलाइट्स जैसे पोटेशियम, कैल्शियम, मैंगनीज, एंटीऑक्सिडेंट, अमीनो एसिड और साइटोकिनिन से समृद्ध है। नारियल पानी पोटेशियम का सबसे अच्छा स्रोत है और इसमें लगभग ४७० मिलीग्राम पोटेशियम होता है।नारियल जितना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है, उतना ही उसका पानी भी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। नारियल पानी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक तत्वों का भण्डार है जिसका सेवन हृदय व किडनी को स्वस्थ रखने,वजन को कम करने, त्वचा की रंगत में सुधार लाने और मधुमेह जैसे रोग को नियन्त्रण करने में अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। गर्मी के कालखण्ड में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास व विभिन्न रोगाणुओं से सुरक्षित भी रखता है। गर्मी के कालखण्ड में शरीर में होने वाली पानी की कमी को भी आयुर्वेदिक पेय पदार्थ पूर्ति करते हैं ।

तरबूज का रस :- तरबूज के रस में कौन से पोषक तत्व होते हैं? तरबूज के रस में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, फाइबर, पानी, शर्करा, कुछ विटामिन (ए, बी, सी और ई) और कुछ खनिज (कैल्शियम, जस्ता,

सोडियम, आदि) होते हैं। इसमें लाइकोपीन नामक बायोएक्टिव यौगिक भी होता है जो फलों और सब्जियों को लाल रंग देता है। पोषक तत्वों का अच्छा साधन होने के कारण तरबूज का रस गर्मी में ऊर्जा को बूस्ट करता है. इसमें उपस्थित विटामिन बी १ और मैग्नीशियम में डोपामाइन होता है, जो ऊर्जा सेल्स को ईंधन प्रदान करता है। साथ ही बीटा कैरोटीन और विटामिन सी गर्मी में एनर्जी बूस्टर की तरह काम करते हैं. एक गिलास तरबूज का रस पीने से शक्तिहीनता, थकान सब दूर हो सकती है तथा गर्मी में शीतलता प्रदान करता है ।

आम का पणा :- आम के पणे के अन्दर भरपूर मात्रा में कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, फाइबर, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन सी आदि पोषक तत्व पाए जाते हैं जो गर्मी में स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी होते हैं। ऐसे में यदि इनको अपने भोजन में सम्मिलित किया जाए तो स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुँच सकता है। आम का पणा गर्मी में शीतलता के साथ विभिन्न जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है इसके अन्य कई लाभ हैं, यह गर्मी में त्वचा को अच्छी रखता है, पाचन शक्ति को अच्छा बनाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को दृढ़ बनाता है, गर्मी में मधुमेह के लिए बढ़िया विकल्प है और भार घटाने में भी सहायक है।

ठण्डाई :- ठण्डाई में प्रोटीन, ओमेगा ३, विटामिन और जिंक जैसे पोषक तत्वों की उपस्थिति स्मरण शक्ति बढ़ाने में भी सहायता करती है। गर्मी के कालखण्ड में ठण्डाई के नियमित सेवन से मस्तिष्क की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है। होलकोत्सव के पश्चात् दिन के तापमान में भी वृद्धि होने लगती है ऐसे कालखण्ड में शरीर को बाहरी तापमान के अनुकूल रखने के लिए ठण्डाई का सेवन अत्यधिक लाभप्रद होता है। यहाँ यह आवश्यक है कि ठण्डाई व्यसन पदार्थ से रहित हो अन्यथा वह स्वास्थ्य को लाभ के स्थान पर हानि

पहुँचाएगी।

जौ का सत्तू :- सत्तू में कई तरह के पोषक तत्व जैसे फाइबर, आयरन, मैंगनीज, प्रोटीन, मैग्नीशियम और लो सोडियम आदि होते हैं। यह शरीर को गर्मी में शीतलता प्रदान करता है। गर्मी में इसका शरबत पीने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। सत्तू का सेवन मधुमेह रोगियों के लिए भी शक्तिवर्धक माना गया है। जौ का सत्तू यूरिक एसिड को कम करने में मदद कर सकता है. फाइबर से भरपूर होने के कारण जौ का सत्तू शरीर में प्रोटीन मेटाबॉजिल्म को तेज कर देता है जिससे शरीर में प्यूरिन जमा होने की गति कम हो जाती है. यहाँ तक कि यह रक्त में जमा प्यूरिन शरीर से बाहर निकाल देता है।

पुदीना का रसः- पुदीने में ०.४ ग्राम प्रोटीन, ०.९ ग्राम कार्बोहाइड्रेट, ०.८ ग्राम आहार फाइबर, १.५ मिलीग्राम विटामिन सी, २२.४ मिलीग्राम कैल्शियम, ६.८ मिलीग्राम फॉस्फोरस और ५१.५ मिलीग्राम पोटेशियम व अन्य पोषक तत्व होते हैं। गर्मी में ये हर तरह की पेट की समस्याओं को ठीक करता है, यह गर्म कालखण्ड में इम्यून सिस्टम को बूस्ट करता है, शरीर में एक्ने मुक्त त्वचा देता है, गर्मी में ये जी घबराना और उल्टी जैसी समस्या से लड़ता है,ये एलर्जी और अस्थमा को ठीक करता है, ओरल हाइजीन का ख्याल रखता है।

खीरा :- पोषक तत्व खीरे में भरे हुए हैं। केवल एक कप खीरे के स्लाइस में दिन भर के लिए आवश्यक विटामिन-के का १४% से १९% मिलेगा। विटामिन बी और सी के साथ-साथ ताम्बा, फास्फोरस, पोटेशियम और मैग्नीशियम जैसे खनिज भी मिलेंगे। गर्मी के कालखण्ड में खीरे का पानी या रस, सलाद खाली पेट ग्रहण करने से शरीर अच्छे से हाइड्रेट रहता है. यह शरीर को डिटॉक्स करने के लिए सबसे अच्छा ड्रिंक माना जाता है। वजन घटाना खीरे के रस के कई स्वास्थ्य लाभों में से एक है एंटीऑक्सिडेंट गुण खीरे के रस के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक हैं।

आँवले का रसः- आँवले के रस में इम्यूनिटी बूस्ट होती है, क्योंकि आँवले के रस में विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स आयरन, ऐन्थो साइनिन, फ्लैवोनोइड्स और पोटेशिय भरपूर मात्रा में होती है. गर्मी में इससे शरीर संक्रमित रोगों से दूर रहता है। आँवला विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट का एक शक्तिशाली स्रोत है खाली पेट आँवले का रस पीने से प्रतिरक्षा, पाचन स्वास्थ्य और स्वस्थ बाल और त्वचा को सहायता मिल सकती है। दैनिक सेवन कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने, विषहरण को बढ़ावा देने और चयापचय को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

एलोवेरा रसः- एलोवेरा रस पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें विटामिन बी, सी, ई और फोलिक एसिड जैसे महत्वपूर्ण विटामिन और खनिज होते हैं। एलोवेरा भी विटामिन बी-१२ के एकमात्र पादप स्रोतों में से एक है।एलोवेरा जूस पीना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है क्योंकि इसके कई लाभकारी प्रभाव होते हैं जैसे भार घटाने वाले प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना, बालों के विकास में मदद करना, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल, त्वचा आदि के लिए लाभप्रद हो सकता है। गर्मी के कालखण्ड में एलोवेरा का रस शीतलता प्रदान करने के साथ लीवर को व्यवस्थित करता है गर्मी में फैटी लीवर होने पर एलोवेरा रस लीवर फैट को कम करके पाचन क्रिया दृढ़ करने में सहायक होता है।

फलों का रस :- गर्मी के कालखण्ड में फल या फलों का रस जैसे अनार मौसम्बी सन्तरा, सेव, केला आदि का रस या शेक रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं रक्त की कमी को पूरा करते हैं, गर्मी में शीतलता व जीवाणुओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं । इन फलों में भी फोलेट, कैल्शियम, थियामिन, नियासिन, विटामिन बी ६, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, ताम्बा, राइबोफ्लेविन, पैंटोथेनिक एसिड और विभिन्न प्रकार के फाइटोकेमिकल्स आदि पोषक तत्व होते हैं इसके अलावा, खट्टे फलों में कोई वसा या सोडियम नहीं होता है और पौधे का भोजन होने के कारण कोई कोलेस्ट्रॉल नहीं होता है।

फलों के रस के स्वास्थ्य लाभ : फलों का रस पीना हमेशा लाभप्रद होता है क्योंकि इसमें आपको सभी पोषक तत्व मिलेंगे और आप हाइड्रेटेड भी रहेंगे और फाइबर प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। शरीर के सम्पूर्ण स्वास्थ्य का अनुभव कर सकते हैं। फलों का रस पीने से प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिल सकता है और यह स्वास्थ्यवर्धक और रोगों की रोकथाम में सहायक होता है।

(नोटः- गर्मी में रखें स्वास्थ्य का ध्यान स्वास्थ्य विश्लेषण ज्ञानार्जन व आयुर्वेद वनौषधियों की ज्ञान हेतु प्रस्तुत है, चिकित्सा में प्रयोग करने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य करना चाहिए।) ■

कृष्ण-धर्म की विचारधारा

अनेक लोगों का विचार है कि कृष्ण ने महाभारत में अनेक बार कूटनीति (अन्याय) का आश्रय लिया। ऐसा विचार इसलिए करते हैं क्योंकि कृष्ण को हमने कभी समझने का यत्न ही नहीं किया। चमड़े की जिह्वा को हिलाकर दिल का बोझ हल्का करने में ही हम अन्तिम निर्णय समझ बैठे हैं। कृष्ण ने कभी अन्याय नहीं किया क्योंकि महाभारत में उन्होंने कुछ किया ही नहीं। वे सर्वत्र लिप्त रहते हुए भी सर्वथा अलिप्त ही रहे। पानी में रहते हुए भी सर्वथा बाहर ही रहे। जरासन्ध को भीम ने मारा, कृष्ण ने तो उसे छुआ तक नहीं।

जयद्रथ को अर्जुन ने मारा, भीष्म को शिखण्डी ने मारा, द्रोणाचार्य को घटोत्कच ने मारा, कर्ण को अर्जुन ने मारा, दुर्योधन को भीम ने मारा, कृष्ण ने तो सिवाय कंस और शिशुपाल के और किसी को नहीं मारा और संसार जानता है कि दोनों को भरी सभा में मारा और मारने से पहले उन्हें सावधान कर दिया। फिर भला कृष्ण पर क्यों लांछन लगाया जाता है? कृष्ण ने कूटनीति से सबका नाश किया जबकि स्वयं कृष्ण ने किसी का नाश किया ही नहीं।

कृष्ण ने शिशुपाल को सौ बार क्षमा किया। स्वयं सामर्थ्यवान होते हुए भी वह जरासन्ध से लड़े बिना मथुरा खाली कर गए। पाण्डवों के साथ इतना अन्याय देखते हुए भी उन्होंने कौरव सभा में इतनी नम्रता दिखाई। उन्होंने शान्ति स्थापना का भरपूर यत्न किया। जब कोई और चारा न बचा, तब उन्होंने अपनी नीति का चक्र चलाया। ■

देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

युवा वर्ग विशेष

अच्छे कार्य करें

हमें परोपकार के कार्य करने चाहिये। किसी पीड़ित की सहायता करने पर मन को अत्यन्त खुशी मिलती है। पर–सेवा तन, मन, धन एवं वाणी से की जा सकती है। किसी के पास धन नहीं है तो वह मन से, वाणी से, तन से तो सेवा कर ही सकता है।

एक वृद्धा असहाय, आवास विहीन थी। भीषण सर्दी में उसके पास सोने के लिए फटे–पुराने गुदड़े थे। मैंने लायंस क्लब के अध्यक्ष को यह बात बताई। उन्होंने संस्था की ओर से नए गद्दे–रजाई भरवाकर भेज दिये।

चिड़ियों, पक्षियों के लिए घर की छत पर पानी का कुण्डा भरने में, दाना, बची–खुची रोटी के छोटे–छोटे टुकड़े कर डालने में आत्मिक आनन्द प्राप्त होगा। घर के बाहर एक छोटी खेल बनाकर रोज उसमें पानी भरकर देखें। कुत्ते, बिल्ली, गाय, सांड आदि उसमें पानी पीएँगे तो आपका मन अत्यन्त हर्षित, तृप्त, सन्तुष्ट होगा।

छोटे–छोटे सेवा कार्यों से खुशियाँ बटोरें। आपकी झोली खिले हुए फूलों से भर उठेगी। आप प्रसन्नता के झूले में झूलने लगेंगे।

आचार्य रामगोपाल सैनी
फतेहपुर शेखावाटी, जनपद : सीकर (राज.)
चलभाष : ९८८७३९३७१३

दयानन्द आश्रम, बड़वानी पर द्वितीय मासिक अतिथि यज्ञ साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के साथ सम्पन्न

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' वेद सन्देश और **'वेदों की ओर लौटो'** ऋषि दयानन्द आह्वान को सम्मुख रख विगत तेरह वर्ष से प्रकाशित तथा सम्पूर्ण भारत में प्रसारित मासिक पत्रिका **'वैदिक संसार'** तथा महाराष्ट्र व गुजरात राज्य की सीमा पर मध्यप्रदेश के दूरस्थ, वनवासी बहुल, रेल्वे सुविधा विहीन, औद्योगिक विकास से कोसों दूर जिला मुख्यालय बड़वानी जिसके उत्तर में पाँच किलोमीटर पर नर्मदा नदी बहती है तो दक्षिण में तीन किलोमीटर पर सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला सीना तान मीलों तक दूर-दूर फैली हुई है। इस बड़वानी जिला मुख्यालय पर स्थापित व संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम पर प्रतिमास प्रथम शनिवार सायंकालीन सत्र व प्रथम रविवार प्रातःकालीन सत्र आर्य समाज के किसी सज्जन को अन्यत्र स्थान से आमन्त्रित कर उनके वेदज्ञान का लाभ आश्रम निवासरत विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके सहपाठियों व परिजनों के अतिरिक्त बडवानी नगर व समीपवर्ती स्थानों के निवासियों को भी प्राप्त हो इसी भावना के साथ इस अभियान को नाम दिया गया **'मासिक अतिथि यज्ञ'**।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के २०० वें जन्मदिवस पर लिए गए संकल्पानुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम बड़वानी पर दिनांक ६ व ७ अप्रैल को द्वितीय **'मासिक अतिथि यज्ञ'** शिक्षक लाखनसिंह जी आर्य प्रधान आर्य समाज धार के ब्रह्मत्व में तथा आपके साथ पधारे शिक्षक गिरधारीलाल जी चौधरी प्रधान आर्य समाज दिलावरा व महेश जी आर्य मन्त्री आर्य समाज धार की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया।

दिनांक ६ अप्रैल को नियमित सायंकालीन यज्ञ व संध्योपासना अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न किए गए। भोजनावकाश पश्चात् व्याख्यान सत्र में महेश जी आर्य व लाखन जी आर्य के प्रेरणादायक प्रवचनों का लाभ उपस्थितों ने दत्तचित्त होकर ग्रहण किया। दिनांक ७ अप्रैल, रविवार को साप्ताहिक वृहद् देवयज्ञ लाखनसिंह जी आर्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया जाकर बलिवैश्वदेव यज्ञ की भी आहुतियाँ प्रदान कर वामदेव गान किया गया। यज्ञ पश्चात् प्रवचन सत्र में भाई महेश जी व लाखनसिंह जी के प्रेरणादायक गीत व प्रवचन हुए। अनेक विद्यार्थियों ने प्रश्न किए जिसका समाधान किया गया। वृहद् संख्या में विद्यार्थी एवं परिजन उपस्थित रहे। शान्तिपाठ एवं भोजन पश्चात् आयोजन का समापन किया गया। दोनो सत्र में भोजन व्यवस्था आश्रम की ओर से की गई तथा अतिथियों को ससम्मान विदा किया गया। अतिथियों द्वारा नर्मदा स्नान का भरपूर आनन्द लिया गया।

'मासिक अतिथि यज्ञ' हेतु विद्यार्थियों को प्रेरणादायक रोचक शैली में समझाने बताने की सेवा प्रदान करने वाले वैदिक सिद्धान्तों के जानने समझने वाले ऋषि दयानन्द भक्त आश्रम पधारने के इच्छुक महानुभावों का आश्रम पर स्वागत हैं। कृपया सम्पर्क करें।

(चित्र देखे रंगीन पृष्ठ ३५ पर)

आर्य समाज मानसरोवर जयपुर की वार्षिक सभा और चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मानसरोवर जयपुर की २०२३-२४ की वार्षिक सभा समाज के मुख्य संरक्षक पूर्व लोकायुक्त राजस्थान श्री सज्जनसिंह कोठारी जी की अध्यक्षता और मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई।

सभा में समाज की नई कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वश्री सज्जनसिंहजी कोठारी मुख्य संरक्षक, श्री अर्जुनदेव कालड़ा संस्थापक/संरक्षक, सुनीलकुमार अरोड़ा प्रधान, विनोदकुमार मेहरा और कुंदनलाल मक्कड़ उपाध्यक्ष, तुंगनाथ त्रिपाठी मन्त्री, सतीश मित्तल उपमन्त्री, ओमप्रकाश गुप्ता कोषाध्यक्ष एवं सुरेश साहनी, दिनेश गुप्ता, हरगोपाल मनचंदिया, आर्य राहुल दीवान, गणपतलाल गुप्ता, श्रीमती मंजू धींगड़ा, श्रीमती मिथिलेश आर्य, श्रीमती सरोज रानी कालड़ा और श्रीमती सुधा मित्तल सदस्य चुने गए।

दयानन्द आश्रम, बड़वानी (म.प्र.) पर सम्पन्न द्वितीय 'मासिक अतिथि यज्ञ' की चित्रावली

अतिथियों के ब्रह्मत्व में शनिवार सायंकालीन सत्र में देवयज्ञ एवं सन्ध्योपासना

शनिवार रात्रिकालीन प्रवचन सत्र में उद्बोधन प्रदान करते लाखनसिंह जी आर्य एवं महेश जी आर्य

उपदेशामृत पान करते विद्यार्थीगण एवं उपस्थित महानुभाव

लाखनसिंह जी आर्य का अभिनन्दन आश्रम संचालक सुखदेव शर्मा द्वारा

महेश जी आर्य का अभिनन्दन आर्यवीर जगदीश गोरे, वेदपुरी द्वारा

शिक्षक गिरधारीलाल जी चौधरी, दिलावरा का अभिनन्दन विद्यार्थी पर्वत मौर्य के द्वारा

लाखनसिंह जी आर्य के ब्रह्मत्व में रविवारीय साप्ताहिक वृहद देवयज्ञ

आहुतियाँ प्रदान करते यजमानगण एवं मन्त्र पाठ करते विद्यार्थीगण व परिजन

यज्ञ पश्चात् उपदेश प्रदान करते यज्ञ ब्रह्मा लाखनसिंह जी आर्य

उपदेशामृत पान करते विद्यार्थीगण एवं उपस्थित महानुभाव

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३४ पर

'मासिक अतिथि यज्ञ' समापन पर अतिथियों के साथ उपस्थितजनों का लिया गया सामूहिक चित्र

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ ● सम्पादक : ओमप्रकाश आर्य ● डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२४-२६

सनातन वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु समर्पित 'वैदिक संसार' पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

स्मृति शेष
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सा.आ.प्र. सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री रामफलसिंहजी आर्य
वैदिक प्रवक्ता
भिवानी (हरियाणा)

श्री शिवनारायणजी उपाध्याय
वेद मर्मज्ञ
कोटा (राजस्थान)

आ. सत्यसिन्धु जी आर्य
प्राचार्य : आर्ष गुरुकुल
नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मप्र)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
जीवन प्रभात
गान्धीधाम, गुजरात

श्री दीनदयालजी गुप्ता
प्रधान : आर्य प्र.सभा बंगाल
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री रमेशमुनि वानप्रस्थी
वेद सैनिक
कोलकाता (प.बंगाल)

श्री आनन्ददेव जी आर्य
आर्यत्व के प्रतिमान
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री जयदेव जी आर्य
उद्योगपति एवं दानवीर
राजकोट (गुजरात)

न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी
पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान
जयपुर (राज.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
अजमेर (राज.)

कर्नल चन्द्रशेखरजी शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

स्मृति शेष
श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
आगरा (उ.प्र.)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री नरेश जी दम्मीवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सीतारामजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री लक्ष्मीनारायणजी पाटीदार (आर्य) संभाग प्रभारी, उज्जैन
विक्रम नगर (मौलाना), म.प्र.

श्री शंकलालजी लदरेचा
वरिष्ठ समाजसेवी
बीकानेर (राज.)

श्री बालकृष्णजी गुप्त
संयुक्त कलेक्टर (से.नि.)
ग्वालियर (म.प्र.)

श्री अशोक कुमारजी गुप्ता
वैदिक ज्ञान पिपासु
शिवपुरी (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वैदिक भामाशाह
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री ब्रह्मदत्तजी शर्मा
वैदिक धर्म प्रेमी
रोहतक (हरियाणा)

श्री रामचन्द्रजी कारपेन्टर
से.नि. शिक्षक
ब्यावरा (म.प्र.)

श्री शीतलकुमारजी पटेल
वेद भक्त युवा
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री मोहनलालजी दशोरा
वैदिक साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री श्रीराम कुमार आर्य
पूर्व जिला शिक्षा पदाधिकारी
सरसोल खुर्द, शिवहर (बिहार)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमती सुमित्राजी - श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
योग प्रशिक्षिका — उदारमना धर्मनिष्ठ
नरोड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)

श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया
वरिष्ठ समाजसेवी
झोकर (म.प्र.)

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई को उनके गृह ग्राम नेनोरा (म.प्र.) में आपके द्वारा आयोजित आयोजन के अवसर पर एवं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री आचार्य जीववर्धन जी शास्त्री को विशेषांक प्रति भेंट करते आर्य समाज पिपलियामण्डी के धर्माचार्य पं. सत्येन्द्र जी आर्य एवं सम्भागीय उपप्रधान श्री बंशीलालजी आर्य।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित